सच्चा दीन

(लड़कों और लड़कियों के लिए दीनी तालीम का सेट)

भाग-2

(संशोधित संस्करण)

अफ़ज़ल हुसैन

एम॰ए॰, एल॰टी॰

पुनरीक्षण

पाठ्य पुस्तक-लेखन एवं सम्पादन-समिति

विषय-सूची

कुछ बातें संशोधित संस्करण के बारे में 5
भूमिका 7
हम्द 9
नअ़त 10
इस्लाम और उसके फ़ायदे 11

अक़ाइद व इबादात

ईमान 17
अल्लाह की किताबें 23
फ़रिश्ते 27
ख़ुदा एक है 33
इस्लाम के अरकान (खम्भे) 34
नमाज़ 39
नमाज़ की शर्तें 46
नमाज़ के अ़रकान 51
नमाज़ में हम क्या पढ़ते हैं? 54
हमारी ईदें 61

आदाब और हुक़ूक़

अदब और सलीक़े की बातें 67
- मस्जिद के आदाब 67
- क्लास के आदाब 68
- खाने-पीने के आदाब 69

- बातचीत के आदाब 7
- मजलिस या इज्तिमा के आदाब 7

15. दूसरों का हमपर हक़ 7
- अल्लाह तआ़ला का हक़ 7
- प्यारे नबी (सल्ल॰) का हक़ 7
- माँ-बाप का हक़ 7
- उस्ताद का हक़ 7
- बहन-भाइयों का हक़ 7

16. माँ-बाप 8

सीरतुन्नबी

17. प्यारे नबी (सल्ल॰) कैसे थे? 8
18. प्यारे नबी (सल्ल॰) की प्यारी बातें 8
19. अल्लाह की राह में सताया जाना 9

20. हमारे सच्चे ख़लीफ़ा 9
- हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) 9
- हज़रत उमर (रज़ि॰) 10
- हज़रत उस्मान ग़नी (रज़ि॰) 10
- हज़रत अली (रज़ि॰) 10

21. नबियों के हालात 10
- हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) 10
- हज़रत मूसा (अलैहि॰) 11
- हज़रत ईसा (अलैहि॰) 11

22. दुआ 12

कुछ बातें संशोधित संस्करण के बारे में

'सच्चा दीन' इस्लामी-शिक्षाओं (इस्लामियात) पर मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स रा प्रकाशित एक अत्यन्त उपयोगी और लोकप्रिय सेट है, जो कई भाषाओं में छप चुका । बहुत दिनों से इस बात की ज़रूरत महसूस की जा रही थी कि इसमें छात्र-छात्राओं लिए ज़रूरी अभ्यासों को भी शामिल किया जाए। आजकल पाठ्य पुस्तकों में हर पाठ बाद पर्याप्त अभ्यास दिए जाते हैं, ताकि छात्र-छात्राओं को पाठ्य सामग्री अच्छी तरह झ में आ जाए। एक ज़रूरत यह भी महसूस की जा रही थी कि छात्र-छात्राओं और ध्यापकों की आसानी के लिए कठिन शब्दों के अर्थ भी किताब में दे दिए जाएँ। इसी ए पुनरीक्षण के दौरान इस बात का ख़ास ख़याल रखा गया है।

जहाँ ज़रूरत महसूस की गई वहाँ कुछ चीज़ें घटाई-बढ़ाई भी गई हैं, जिससे किताब उपयोगिता और अधिक बढ़ गई है। पुनरीक्षण और अभ्यासों की तैयारी के काम में दरणीय श्री सैयद शाह हुसैन नेहरी ने विशेष दिलचस्पी ली। इसके अतिरिक्त विभाग साथी सर्वश्री अबुल मुजाहिद 'ज़ाहिद', मुहम्मद जावेद इक़बाल, मिर्ज़ा निहाल हबीब ा और मुहम्मद शफ़ीक़ आलम नदवी ने भी सहयोग किया। भाई मुहम्मद अली इस्लाही हब और डॉक्टर ताबिश मेहदी साहब के मशविरे भी इसमें शामिल रहे। जनाब लाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही साहब की निगरानी में संशोधित उर्दू संस्करण के अनुसार न्दी संस्करण के संशोधन और पुनरीक्षण में मुहम्मद इलियास हुसैन का योगदान रहा र सैयद ख़ालिद निज़ामी साहब के मशविरे शामिल रहे। इन सज्जनों के अलावा जिन ानुभावों ने भी क़िताब को इस चरण तक पहुँचाने में सहयोग दिया, हम उन सबके कगुज़ार हैं। अल्लाह तआला सभी सज्ज़नों को अच्छा बदला प्रदान करे।

किताब को बेहतर से बेहतर बनाने के लिए शिक्षकों, अभिभावकों और विद्वानों के मूल्य विचारों और सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

07-12-2009

मुहम्मद अशफ़ाक़ अहमद
निगराँ (निरीक्षक)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

"अल्लाह के नाम से जो बेइन्तिहा मेहरवान और रहम फ़रमानेवाला है।"

भूमिका

मुसलमान बच्चों के लिए इस्लामियात पर एक ऐसे सेट की ज़रूरत बहुत दिनों से सूस हो रही थी, जिसकी मदद से आरंभिक कक्षाओं के बच्चों को कम से कम समय अक़ायद, इबादात, सीरतुन्नबी, अंबिया और सुलहा की सीरतें, सामाजिक तौर-तरीक़े, व्रलाक़ व आदात वग़ैरह के बारे में ज़रूरी मालूमात दी जा सकें और विषय-सामग्री का र बढ़ाए बिना आसान ज़बान में और बच्चों की समझ के मुताबिक़ दीन (इस्लाम धर्म) सादा, मगर ठीक-ठीक नक़्शा उनके दिमाग़ में बिठाया जा सके।

पिछले दस-बारह साल से कोर्स की किताबों के ज़रीए से एक ही अक़ीदे व धर्म की ीम और मुशरिकाना अक़ाइद और ग़ैर इस्लामी बातों के प्रचार-प्रसार ने इस ज़रूरत और ज़्यादा बढ़ा दिया। यह सेट असल में इसी ज़रूरत को पूरा करने के लिए तैयार या गया है।

सेट की विशेषताएँ :

ज़बान बहुत-ही सादा और बयान करने का ढंग बच्चों की समंझ के मुताबिक़ है।

बच्चों के स्वभाव और उनकी दिलचस्पियों का पूरा ध्यान रखा गया है।

हर किताब में दीन का पूरा ख़ाका पेश करने की कोशिश की गई है और दीन के हर पहलू से मुताल्लिक़ ज़रूरी मालूमात दी गई हैं।

दीन का पूरा ख़ाका देने की कोशिश के बावजूद बहुत कम जगह में सिर्फ़ हल्की-फुल्की मालूमात देने को काफ़ी समझा गया है, ताकि बच्चे आसानी से कम से कम समय में दीन से वाक़िफ़ हो जाएँ।

5. मुख़्तलिफ़ फ़िक़्ही मसलकों के आलिमों के मशविरे और नज़रसानी के बाद इ प्रकाशित किया जा रहा है, ताकि हर मसलक के बच्चे इससे फ़ायदा उठा सकें

6. जहाँ तक हो सका है छोटे-मोटे मतभेदों को नज़र-अन्दाज़ करके बुनियादी अं ऐसी बातें पेश की गई हैं जिनपर सब सहमत हैं, ताकि बच्चों के दिमाग़ में उलझ न पैदा हो।

7. मुशरिकाना अक़ीदे और ग़ैर इस्लामी बातें जो कोर्स की किताबों और स्कूलों वातावरण का ज़रूरी अंग बनते जा रहे हैं, उनके सिलसिले में हक़ीक़ी बातें बत की कोशिश की गई है, ताकि बच्चों का दिमाग़ उनके बुरे प्रभावों से बचा रहे

इस सेट को ज़्यादा फ़ायदेमन्द बनाने के लिए तमाम मशविरे शुक्रिये के साथ क़ब किए जाएँगे। ख़ुदा करे हमारी यह छोटी-सी कोशिश नई नस्ल के लिए फ़ायदेम साबित हो।

वमा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाह।

(तौफ़ीक़ अल्लाह ही के हाथ में है।)

अफ़ज़ल हुसै

रामपुर, अक्टूबर 1961

1

हम्द

— अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर
अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर

ल्लाह अपना सबसे बड़ा है,
कना उसी के आगे रवा है,
ा कुछ किया है, उसने किया है,
ा कुछ दिया है, उसने दिया है,

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर
अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर

ाँद और तारे उसने बनाए,
लों से गुलशन उसने सजाए,
श्मे निकाले, दरिया बहाए,
या-क्या सुहाने जलवे दिखाए,

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर
अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर

ाई-बहन और माँ-बाप बख़्शे,
न्नत बना घर जिनके सबब से,
वे-मिठाई हम उनसे पाते,
लुत्फ़ सारे दम से उन्हीं के,

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर
अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर

(शफ़ीउद्दीन नैयर, 'इस्लामी नज़्में' से)

2

नअ़त

जब इनसाँ था दीन से जाहिल
दुनिया थी अल्लाह से ग़ाफ़िल
उस दम बनकर दीन के हामिल
आए इक इनसाने-मुकर्रम

कौन? मुहम्मद सरवरे-आलम
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल

कुफ़्रो-बदी से लड़ने वाले
जुल्मो-सितम को सहनेवाले
बात मगर हक़ कहनेवाले
करनेवाले रौशन आलम

कौन? मुहम्मद सरवरे-आलम
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल

मालिक का फ़रमान सुनाकर
इनसाँ को इनसान बनाकर
हाथों में क़ुरआन थमाकर
करने आए दीन को मुह्कम

कौन? मुहम्मद सरवरे-आलम
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल

(कौसर आज़मी

3

इस्लाम और उसके फ़ायदे

इस्लाम का अर्थ है अल्लाह तआ़ला के सामने सिर झुकाना, उसका ञा मानना और उसके बताए हुए रास्ते पर चलना। हम सबको अल्लाह ग़ाला ने पैदा किया है। छोटी-बड़ी सारी चीज़ें उसी ने बनाई हैं। सबकी ़रतें वही पूरी करता है। सब उसी का दिया खाते हैं। सब उसी के जिलाए ते हैं। इसी लिए सब उसी के बन्दे और ग़ुलाम हैं। ज़मीन, आसमान, ़ज चाँद, सितारे, सय्यारे सब उसके ताबे हैं। हवा उसी के चलाए चलती । पानी उसी के हुक्म से बरसता है। सारी चीज़ें उसी की ताबे हैं और उसी बताए हुए रास्ते पर चलती हैं। हमारे लिए भी ठीक राह यही है और ी में हम सबका भला भी है कि हम अल्लाह का कहा मानें और उसके ाए हुए रास्ते पर चलें, यानी इस्लाम को अपनाएँ।

इस्लाम को अपनानेवाला 'मुस्लिम' कहलाता है। दीन-दुनिया की सारी ़ाइयाँ इस्लाम ही में हैं। इसलिए इस्लाम पर चलनेवाले को इस्लाम से ़द फ़ायदे पहुँचते हैं। वह दुनिया का बेहतरीन इनसान बन ज़ाता है। उसमें नगिनत ख़ूबियाँ पैदा हो जाती हैं, वह भी ऐसी कि किसी ख़ूबी में कोई उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता।

यहाँ इस्लाम पर चलनेवाले की कुछ ख़ूबियाँ लिखी जाती हैं :

वह नेक और पाकबाज़ होता है। बुराइयों के पास भी नहीं फटकता। वह जानता है कि अल्लाह तआ़ला नेकियों से ख़ुश और बुराइयों से नाराज़ होता है। कभी भूल-चूक हो जाती है तो फ़ौरन तौबा करके फिर

नेक बन जाता है।

2. वह बात का सच्चा होता है। झूठ के पास नहीं जाता। वह जानता कि झूठ सारी बुराइयों की जड़ है।

3. वह वादे का पक्का होता है। कुछ भी हो जाए वह वादा क़रके मुकर नहीं, उसे पूरा करके रहता है। इसी लिए लोग उसके वादों का एतिब करते हैं।

4. वह मामले का खरा होता है। किसी को धोखा नहीं देता, न बेईमा करता है। वह जानता है कि लोग तो धोखा खा सकते हैं, मगर अल्ल से कोई बात छिपी नहीं रह सकती। अल्लाह तो दिलों के भेद जानता है।

5. वह दिल का ग़नी होता है। किसी की धन-दौलत या किसी की अच्छ अच्छी चीज़ें देखकर वह लालच नहीं करता। किसी के सामने हाथ न फैलाता।

6. वह बहादुर और निडर होता है। अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरत वह जानता है कि अल्लाह का हुक्म न हो तो दुनिया की कोई ताक़ उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती।

7. वह रिश्तेदारों के साथ नेक सुलूक करता है। माँ-बाप, भाई-बहन उ रिश्ते-नाते के हक़ को पहचानता है। हर एक के साथ जो भलाई वह कर सकता है, करता है।

8. वह दुख-दर्द में दूसरों के काम आता है। ग़रीबों, दुखियों, यतीमों उ बेवाओं का ख़याल रखता है। उनकों आराम पहुँचाकर सवाब कमा है।

9. वह मेल-मुहब्बत से पेश आता है। बड़ों का अदब, छोटों से प्यार कर

है। छोटा-बड़ा, अमीर-ग़रीब हर एक उसके बर्ताव से ख़ुश होता है। वह किसी का दिल दुखाना पसन्द नहीं करता।

). वह एहसान का बदला एहसान से देता है। किसी ने उसके साथ भलाई की हो तो वह उसे कभी नहीं भूलता। बढ़-चढ़कर उसके साथ भलाई करने की कोशिश करता है।

. वह शर्म व हया का पुतला होता है। बेहयाई के कामों से उसे सख़्त नफ़रत होती है। दूसरों की इज़्ज़त व आबरू को वह अपनी इज़्ज़त व आबरू समझता है। अपनी और दूसरों की इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त करता है।

:. वह सबका भला चाहता है। किसी का बुरा नहीं चाहता। किसी से हसद नहीं करता।

). वह सबके साथ न्याय व इनसाफ़ करता है। किसी पर ज़ुल्म नहीं करता। किसी को सताता नहीं। किसी के साथ पक्षपात नहीं करता। हक़ व इनसाफ़ के मामले में अपने-पराए सब उसकी नज़र में बराबर होते हैं।

:. वह अकड़कर नहीं चलता। इतराता नहीं। अपनी किसी ख़ूबी पर घमंड नहीं करता। वह जानता है कि सारी बड़ाई सिर्फ़ अल्लाह के लिए है। सब इनसान मजबूर और बेबस हैं, अल्लाह के बन्दे और ग़ुलाम हैं। उनके पास अपना क्या है, जो कुछ है अल्लाह का दिया हुआ है।

). वह दूसरों के लिए भी वही पसन्द करता है, जो अपने लिए पसन्द करता है। किसी को ज़लील नहीं समझता। किसी की बेइज़्ज़ती नहीं करता। किसी का माल नहीं मारता। किसी का नाम नहीं बिगाड़ता। किसी का मुँह नहीं चिढ़ाता। किसी की नक़ल नहीं उतारता। पीठ पीछे

किसी की बुराई नहीं करता। बिना पूछे किसी की चीज़ नहीं छूता। व
सोचता है कि जब मैं नहीं पसन्द करता कि दूसरे यह बदसुलूकी
साथ करें, तो मैं दूसरों के साथ ऐसा क्यों करूँ।

ये हैं वे चन्द ख़ूबियाँ जो इस्लाम की वजह से किसी शख़्स में पै
होती हैं। यही वजह है कि अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम ही को हमारे लि
पसन्द किया है। इसी को सच्चा दीन क़रार दिया है और इसपर चलनेवा
को कामयाबी की ख़ुशख़बरी दी है।

وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْكُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

(व अन्-तुमुल्-अ-अ़लौना-इन्-कुन्तुम-मु-मिनीन अर्थात् तुम ही सरबल
रहोगे, अगर वाक़ई तुम मोमिन हो।)

ज़रा सोचिए! जिस शख़्स में इतनी सारी ख़ूबियाँ हों और वे भी ऐ
कि कोई ग़ैर किसी ख़ूबी में भी उसका मुक़ाबला न कर सके, तो हर जग
वह कामयाब और सरबलन्द न होगा तो और कौन होगा!

शब्दार्थ और टिप्पणी

सय्यारे	=	तारे, सितारे
ताबे	=	फ़रमाँबरदार, पैरवी करनेवाला
पाकबाज़	=	परहेज़गार, नेक आदमी
ग़नी	=	दौलतमन्द, धनी, जिसे किसी चीज़ की ज़रूरत न हो
नेक सुलूक	=	अच्छा व्यवहार, सद्व्यवहार
यतीम	=	जिसका बाप मर गया हो, अनाथ
बेवा	=	जिसका पति मर गया हो, विधवा
सवाब	=	पुण्य, नेकी
हिफ़ाज़त	=	सुरक्षा

द करना	=	जलन, बुरा चाहना
फ़ूज़	=	सुरक्षित
ील करना	=	अपमानित करना, बेइज़्ज़त करना, रुसवा करना
सुलूकी	=	दुर्व्यवहार, बुरा व्यवहार
बलन्द	=	इज़्ज़तवाला, बड़े मरतबेवाला, ऊँचे मक़ामवाला
मिन	=	ईमानवाला

अभ्यास

) संक्षिप्त उत्तर दो :

1. इस्लाम का क्या अर्थ है?
2. हम सबका भला किस बात में है?
3. किसी को दुख-दर्द में देखकर तुम क्या करोगे?
4. अगर कोई हमारे साथ भलाई करे तो, हमें उसके साथ क्या, सुलूक करना चाहिए?
5. इस्लाम पर चलनेवालों को अल्लाह ने क्या ख़ुशख़बरी दी है?

) नीचे इस्लाम पर चलनेवालों की कुछ ख़ूबियाँ और बुरे लोगों की कुछ ख़राबियाँ बयान की गई हैं। ख़ूबी और ख़राबी को बताने के लिए उनके सामने बने ख़ानों में ख़ूबी और ख़राबी (जो उचित हो) लिखो :

1. वादा करके मुकर जाता है। ( )
2. जब कोई भूल-चूक हो जाती है, तो फ़ौरन तौबा कर लेता है। ( )
3. बात का सच्चा होता है। ( )
4. दूसरों की अच्छी-अच्छी चीज़ें देखकर लालच करता है। ( )
5. रिश्तेदारों के साथ नेक सुलूक करता है। ( )
6. अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरता। ( )

7. बड़ों का अदब और छोटों से प्यार नहीं करता। ( )
8. अपनी किसी ख़ूबी पर घमंड नहीं करता। ( )

(ग) इस्लाम पर चलनेवालों की कोई पाँच ख़ूबियाँ संक्षेप में लिखो।

(मिसाल के तौर पर एक ख़ूबी लिख दी गई है) :

उत्तर : वह नेक और पाकबाज़ होता है।

1. .....
2. .....
3. .....
4. .....
5. .....

कुछ और काम

इस्लाम पर चलनेवालों की ख़ूबियाँ अच्छी तरह तुम्हारे दिमाग़ में बैठ गईं। इन अमल किया करो और अपने दोस्तों और साथियों को भी इनपर अमल करने उभारो।

जैसे, अपने मुहल्ले के ग़रीब, दुखी और अनाथ बच्चों का हाल-समाचार पूछो उनको अपने साथ पढ़ने-लिखने और खेल-कूद में शामिल करो।

ईमान

अल्लाह का शुक्र है कि हम मुसलमान हैं। अल्लाह ने हमें दीनो-ईमान दौलत बख़्शी है। यह उसका सबसे बड़ा करम है वरना हम भी गुमराहों तरह भटकते फिरते और अपने लोक-परलोक दोनों बिगाड़ लेते।

हमारा दीन इस्लाम है। इस्लाम अल्लाह की इताअ़त और फ़रमाँबरदारी कहते हैं। अल्लाह तआ़ला सिर्फ़ अच्छी बातों और अच्छे कामों का हुक्म है, बुरी बातों और बुरे कामों से रोकता है। ज़ाहिर है सबका भला इसी कि वे अल्लाह का कहा मानें, नेकियाँ करें और बुराइयों से दूर रहें। इस्लाम है और अल्लाह की नज़र में यही सच्चा दीन है। दीन-दुनिया सारी भलाइयाँ इस्लाम को अपनाने यानी अल्लाह की इताअतो-फ़रमाँबरदारी ने ही में हैं। इस्लाम की सीधी-सच्ची राह छोड़कर कोई भी फ़लाह नहीं सकता।

ईमान पक्के यक़ीन को कहते हैं। हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि तौहीद, रिसालत और आख़िरत पर ईमान लाए। जब तक इन तीनों को से न माना जाए, इनपर पूरा यक़ीन न रखा जाए, कोई शख़्स अल्लाह इताअ़त व फ़रमाँबरदारी कर ही नहीं सकता। यानी वह न तो इस्लाम चल सकता है और न मुसलमान हो सकता है। इसी लिए हम सबका ार ईमान है और हम अपने ईमान की पूरी हिफ़ाज़त करते हैं।

तौहीद

तौहीद का अर्थ है अल्लाह को उसके नामों और सिफ़तों के साथ एक

और तन्हा जानना और मानना। हमारा ईमान है कि अल्लाह एक है। उ
ने सबको पैदा किया। वही रोज़ी देता है। वही जिलाता और मारता है। व
सबका हाकिम और बादशाह है। ज़मीन, आसमान, सूरज, चाँद, सम्प
जानदार, बेजान, हर बड़ी और छोटी चीज़ उसके क़ब्ज़े में है। राजा-प्र
अमीर-ग़रीब, छोटा-बड़ा हर एक उसका मोहताज है। वह अपने किसी व
के लिए किसी का मोहताज नहीं। जिन्न, फ़रिश्ते, नबी, वली सब उस
बन्दे और गुलाम हैं। नफ़ा-नुक़सान, इज़्ज़त-ज़िल्लत, धन-दौलत, सब
उसके हाथ में है। उसका हुक्म न हो तो कोई न ज़र्रा बराबर फ़ायदा पहु
सकता है, न नुक़सान। वह देना चाहे तो कोई रोक नहीं सकता। वह छीन
चाहे तो कोई बचा नहीं सकता। वह पकड़ना चाहे तो कोई छुड़ा न
सकता। वह छोड़ना चाहे तो कोई पकड़ नहीं सकता। छोटे-बड़े किसी व
में कोई उसका शरीक नहीं। वह सब कुछ देखता और सुनता है। हर च
का पूरा-पूरा इल्म रखता है। वह हर कमज़ोरी और बुराई से पाक है। जित
अच्छाइयाँ हैं सबकी सब उसी में हैं। किसी में अगर कोई ख़ूबी पाई ज
है, तो वह उसी की दी हुई है।

तौहीद पर ईमान लाने की वजह से हम मुसलमान—

① सिर्फ़ अल्लाह की इबादत या बन्दगी करते हैं। किसी और के सा
न सिर झुकाते और न हाथ फैलाते हैं।

② अल्लाह के सिवा न तो किसी और से दुआ माँगते हैं, न किसी
की पनाह ढूँढते हैं। दुख-दर्द में भी उसी को पुकारते हैं।

③ हम जानते हैं कि हमें जो कुछ मिलता है अल्लाह का दिया हुआ मिल
है। कोई दूसरा न तो हमें कुछ दे सकता है और न हमसे कुछ ह
सकता है।

④ हम खुले-छिपे हर हाल में अल्लाह से डरते रहते हैं। कोई काम उस

मर्ज़ी के ख़िलाफ़ नहीं करते। हमें ख़ूब मालूम है कि उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ चलकर हम उसकी पकड़ से बच नहीं सकते।

रिसालत

रिसालत पर ईमान लाने का अर्थ है अल्लाह के रसूलों पर ईमान ाना।

हम मुसलमानों का ईमान है कि अल्लाह ने दुनियावालों को अपनी र्ज़ी बताने और उन्हें सीधी राह दिखाने के लिए अपने पैग़म्बर यानी नबी ार रसूल भेजे। रसूलों को नबी और पैग़म्बर भी कहा जाता है। सब ाम्बर इनसान थे, अल्लाह के नेक बन्दे थे, निहायत सच्चे और बुराइयों पाक थे। इन बुज़ुर्गों ने इनसानों तक अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाया। उसके म्मों पर चलकर दिखाया। लोगों को सीधी राह पर लाने के लिए ख़ून-ीना एक कर दिया। उन्होंने नादानों के हाथों तरह-तरह के दुःख झेले ार जब तक ज़िन्दा रहे इनसानों की भलाई के लिए जान खपाते रहे और हें अल्लाह की बन्दगी और अपनी पैरवी के लिए उभारते रहे।

अल्लाह ने बहुत-से नबी और रसूल भेजे। उन सबने लोगों को इस्लाम ा दावत दी। सबसे आख़िर में हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) तशरीफ़ लाए। ल्लाह ने आप (सल्ल॰) पर क़ुरआन मजीद उतारा। आपके बाद अब कोई ी और रसूल नहीं आएगा। क़ियामत तक अब आप ही के बताए हुए स्ते पर चलने में सबकी भलाई और नजात है।

रिसालत पर ईमान लाने के बाद हम मुसलमान—

) सारे नबियों को अल्लाह के सच्चे नबी और रसूल मानते और उनकी दिल से इज़्ज़त करते हैं।

) प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को अल्लाह का आख़िरी रसूल मानते

हैं और आप ही की पैरवी में अपनी नजात समझते हैं।

③ हम हर वह बात फ़ौरन मान लेते हैं, जिसके बारे में पता चल जाए कि प्यारे नबी (सल्ल॰) ने यह बात कही है।

④ हर काम और हर बात में हम प्यारे नबी (सल्ल॰) के नमूने को अप सामने रखते हैं। ग़ैरों की नक़्क़ाली करके अपना दीनो-ईमान न बिगाड़ते।

3. आख़िरत

आख़िरत पर ईमान लाने का अर्थ है मरने के बाद दोबारा उठाए जा पर ईमान लाना। आख़िरत को परलोक भी कहा जाता है।

तौहीद और रिसालत के बाद तीसरी बात, जिसका हमें पक्का यक़ी है और जिसपर हम सब मुसलमानों का ईमान है वह यह है कि एक दि सारे इनसान मर-मिट जाएँगे। सारी दुनिया ख़त्म हो जाएगी। न ज़मीन रहेग न आसमान, न सूरज रहेगा, न चाँद न तारे। फिर अल्लाह तआ़ला अगले पिछले तमाम इनसानों को दोबारा ज़िन्दा करेगा। सबको हश्र के मैदान इकट्ठा किया जाएगा। हर एक का कच्चा चिट्ठा उसके सामने आएगा फिर अल्लाह सबका हिसाब लेगा। जिन लोगों ने अल्लाह का कहा मान होगा और उसके रसूलों की पैरवी की होगी, नेकियाँ कमाई होंगी, बुराइ से बचे होंगे, अल्लाह उनसे ख़ुश होगा, उन्हें रहने के लिए जन्नत देगा, जह वे हमेशा रहेंगे। जन्नत में हर तरह का आराम होगा। वे जो चाहेंगे पाएँगे वहाँ ऐसी-ऐसी नेमतें मिलेंगी जिनको हम सोच भी नहीं सकते।

रहे वे लोग जिन्होंने अल्लाह की नाफ़रमानी की होगी, रसूलों की पैर से मुँह मोड़ा होगा, बुरे-बुरे काम किए होंगे, ख़ुद भी भटके होंगे और दूस को भी भटकाया होगा और इस तरह दुनिया में फ़ितना व फ़साद फैला

ा सबब बने होंगे, उन ज़ालिमों से अल्लाह नाराज़ होगा। उन्हें सख़्त सज़ा ाा। ऐसे लोग जहन्नम की आग में डाले जाएँगे। जहन्नम बहुत ही बुरा काना है। वहाँ उन्हें तरह-तरह का दुःख दिया जाएगा, ऐसा दुःख कि हम च भी नहीं सकते। अल्लाह की पकड़ बहुत ही सख़्त है। जिसे अल्लाह पकड़ना हे उसे कोई बचा नहीं सकता और न उसे कहीं पनाह मिल सकती है।

ऐ हमारे रब! हमारी भूल-चूक माफ़ कर दे। हमें जहन्नम की आग से ग। हमें दुनिया व आख़िरत की सारी भलाइयाँ अता फ़रमा।

رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

(ऐ हमारे पालनहार! हमें दुनिया में भी भलाई अता फ़रमा और आख़िरत में भी। और हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा ले।)

शब्दार्थ और टिप्पणी

शुक्र	=	मेहरबानी
तौहीद	=	अल्लाह को एक मानना
वली	=	अल्लाह का दोस्त, उसका वफ़ादार बन्दा
रिसालत	=	रसूलों को मानना
करम	=	कृपा, मेहरबानी
जान खपाना	=	सख़्त मेहनत करना, कठोर परिश्रम करना
उकसाना	=	उभारना, तैयार करना
क़ियामत	=	प्रलय, आख़िरी दिन
नजात	=	मुक्ति, रिहाई, छुटकारा
फ़ितना	=	हंगामा, झगड़ा
फ़साद	=	बिगाड़
जहन्नम	=	नरक, दोज़ख़
नक़्क़ाली	=	नक़ल उतारना
हश्र	=	क़ियामत,
सबब	=	कारण, ज़रीआ

कच्चा चिट्ठा = सही-सही हाल
जिन्न = एक मख़लूक़ (प्राणी), जिसको अल्लाह ने आग से पैदा किया है।
जान खपाना = सख़्त मेहनत करना
इज़्ज़त-ज़िल्लत = मान-अपमान

अभ्यास

(क) संक्षिप्त उत्तर दो :

1. अल्लाह का हम पर सबसे बड़ा करम (अनुग्रह) क्या है?
2. 'इस्लाम' और 'ईमान' से तुम क्या समझते हो?
3. अगर हमें ईमान की दौलत न मिलती तो क्या होता?
4. तौहीद (एकेश्वरवाद) किसे कहते हैं?
5. आख़िरत पर ईमान लाने का क्या मतलब है?
6. रिसालत क्या है?
7. रिसालत पर ईमान लाने के बाद हमें क्या करना चाहिए?

(ख) ख़ाली जगहों को भरो :

1. अल्लाह की नज़र में.....सच्चा दीन (धर्म) है।
2. हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वह तौहीद, रिसालत और..... .....पर ईमान लाए।
3. जिन्न, फ़रिश्ते, नबी, वली सब उसके.....और ग़ुलाम हैं।
4. दुनियावालों को सीधी राह दिखाने के लिए अल्लाह ने अपने पैग़ाम और.....भेजे।
5. अल्लाह ने आप (सल्ल॰) पर .....उतारा।
6. आप (सल्ल॰) के बाद अब कोई नबी और.....न आएगा।
7. अल्लाह जिनसे ख़ुश होगा उन्हें.....देगा।
8. .....बहुत ही बुरा ठिकाना है।

कुछ और काम

इस सबक़ में जो दुआ बताई गई है, उसको अर्थ के साथ याद कर लो।

अल्लाह की किताबें

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों पर बहुत मेहरबान है। उसने सबको पैदा ा। तरह-तरह की चीज़ें बनाईं। ज़रूरत का सारा सामान दिया और इतने र बस नहीं किया, बल्कि रहने-सहने का ठीक-ठीक ढंग भी बता दिया, के उसपर चलकर हम दुनिया में अच्छी तरह रहें और आख़िरत में जन्नत मिले। अल्लाह ने ये बातें न बताई होतीं तो लोग भटकते फिरते, सीधी न पाते।

सीधी राह दिखाने के लिए अल्लाह ने बहुत-से नबी और रसूल भेजे। तों पर अपनी किताबें उतारीं। इन किताबों में अल्लाह की बातें होती । रसूल खुद भी इन बातों पर चलते थे और दूसरों को भी यही बातें सुनाते इनपर चलना सिखाते थे। हम मुसलमानों का ईमान है कि अल्लाह ने ा-सी किताबें उतारीं, छोटी भीं, बड़ी भी। इन किताबों की ठीक-ठीक ती तो अल्लाह ही को मालूम है। अलबत्ता इनमें चार किताबें बहुत हूर हैं।

तौरात

अल्लाह तआ़ला ने यह किताब हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) पर री थी। वे अल्लाह के प्यारे रसूल थे। उनका कुछ हाल हम आगे पढ़ेंगे। ा दिनों तक इस किताब से लोगों को रहने-सहने का ठीक-ठीक ढंग म होता रहा और लोग भटकने से बचे रहे, मगर उनके नामलेवा यहूदियों इस किताब की बहुत-सी बातें बदल डालीं और इसमें इधर-उधर की

बहुत-सी बातें भी मिला दीं। कुछ लोगों की ग़फ़लत और कुछ की शरा से यह किताब गडमड हो गई। यहूदियों की इन हरकतों से अल्लाह का कुछ नहीं बिगड़ा। वे ख़ुद ही भटकने लगे और अपनी दीन और दुनिया दो को बिगाड़ बैठे।

❷ ज़बूर

यह किताब हज़रत दाऊद (अलैहि॰) पर उतरी थी। यहूदियों ने किताब के साथ भी वही हरकत की जो वे तौरात के साथ कर चुके आख़िर इस किताब का भी कोई एतिबार नहीं रह गया।

❸ इंजील

यह किताब हज़रत ईसा (अलैहि॰) पर उतारी गई थी। हज़रत ई (अलैहि॰) भी एक मशहूर नबी हुए हैं। इनका भी कुछ हाल हम आगे पढ़ें हज़रत ईसा (अलैहि॰) के उठा लिए जाने के बाद ईसाइयों ने धीरे-ध इंजील पर अमल करना छोड़ दिया। कुछ शरारती लोगों ने इसमें इधर-उ की बातें मिला दीं। आख़िर यह किताब भी गडमड हो गई। मिलने को बाइबल के नाम से बाज़ार में एक किताब इस वक़्त भी मिल सकती है म वह अपनी असली हालत में नहीं है।

प्यारे नबी (सल्ल॰) के आने से पहले-पहले लोग इन सब किताबों बिगाड़ पैदा कर चुके थे और इनमें से किसी किताब का कोई भरोसा न रह गया था।

❹ क़ुरआन मजीद

अल्लाह तआ़ला की यह आख़िरी किताब है। यह प्यारे नबी हज़ मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्ल॰) पर उतरी। इसकी ज़बान अरबी है। अल्लाह यही किताब अब अपनी असली हालत में हमारे पास मौजूद है। इस

बिगाड़ से बचाने और ठीक-ठीक बाक़ी रखने की ज़िम्मेदारी ख़ुद अल्लाह आ़ला ने ली है। क़ियामत तक अब इसी किताब से दुनियावालों को सीधी ह मालूम हो सकती है। हम क़ुरआन मजीद की पाबन्दी से तिलावत करते । धीरे-धीरे अरबी पढ़कर इसकी बातें भी समझने लगेंगे।

ऐ अल्लाह! हमें क़ुरआन की बताई हुई सीधी राह पर चला, ताकि में दुनिया में भी इ़ज़्ज़त मिले और हमारी आख़िरत भी सँवर जाए। हमें री ख़ुशी हासिल हो और जन्नत हमारा आख़िरी ठिकाना बने।

शब्दार्थ और टिप्पणी

भटकना	=	सीधे रास्ते से हट जाना.
यहूदी	=	हज़रत मूसा (अलैहि॰) के नामलेवा, हज़रत मूसा (अलैहि॰) को मानने का दावा करनेवाले।
ग़फ़लत	=	असावधानी, लापरवाही
गडमड होना	=	मिल जाना
एतिबार	=	भरोसा, विश्वास
ईसाई	=	हज़रत ईसा (अलैहि॰) के नामलेवा, हज़रत ईसा (अलैहि॰) को मानने का दावा करनेवाले।
क़ियामत	=	वह दिन जब यह दुनिया ख़त्म हो जाएगी, प्रलय दिवस

अभ्यास

क) संक्षिप्त उत्तर दो :

1. अल्लाह ने अपने नबी और रसूल किस लिए भेजे?
2. क़ुरआन मजीद के अलावा अल्लाह की दूसरी किताबों का कोई एतिबार क्यों बाक़ी नहीं रहा?

3. वह कौन-सी किताब है जिससे क़ियामत तक दुनियावालों को सीधी राह मालूम हो सकती है?
4. क़ुरआन करीम को ठीक-ठीक बाक़ी रखने की ज़िम्मेदारी किसने ली है?
5. इस पाठ में क़ुरआन मजीद से सम्बन्धित कौन-सी दुआ सिखाई गई है?

(ख) सही जोड़े लगाओ :

1.	तौरात	हज़रत दाऊद (अलैहि॰)
2.	इंजील	हज़रत मूसा (अलैहि॰)
3.	क़ुरआन मजीद	हज़रत ईसा (अलैहि॰)
4.	ज़बूर	हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्ल॰)
5.	ईसाई	हज़रत मूसा (अलैहि॰) के नामलेवा
6.	यहूदी	हज़रत ईसा (अलैहि॰) के नामलेवा

(ग) ख़ाली जगहों को भरो :

1. .....अपनी अस्ल हालत में हमारे पास मौजूद है।
2. क़ुरआन मजीद अल्लाह तआ़ला की.....किताब है।
3. हम पाबन्दी से क़ुरआन मजीद की.....करते हैं।
4. क़ुरआन मजीद की ज़बान.....है।
5. ईसा (अलैहि॰) के उठा लिए जाने के बाद ईसाइयों ने धीरे-धीरे..... .....पर अमल करना छोड़ दिया।
6. .....ने तौरात की बहुत-सी बातें बदल डालीं।

(घ) क़ुरआन मजीद के बारे में पाँच वाक्य लिखो :

जैसे : क़ुरआन मजीद अल्लाह की आख़िरी किताब है।

1. ..... 2. .....
3. ..... 3. .....
5. .....

फ़रिश्ते

हमारा ईमान है कि फ़रिश्ते भी अल्लाह की मख़लूक़ हैं। हममें और रेश्तों में फ़र्क़ यह है कि हम मिट्टी से बने हैं और फ़रिश्ते नूर से बनाए ए हैं। वे न तो हमारी तरह मर्द होते हैं न औरत, न खाते-पीते हैं, न ते-ऊँघते हैं। वे हर जगह फैले हुए हैं लेकिन हवा की तरह आँख से झल रहते हैं। उनके बाज़ू भी होते हैं, किसी के दो-दो, किसी के तीन-तीन र किसी के चार-चार। फ़रिश्ते सब के सब नेक हैं, बुराइयों और ाबियों से पाक हैं।

फ़रिश्ते बहुत ही फ़रमाँबरदार बनाए गए हैं। वे जिस काम पर लगा ए जाते हैं उसी पर हमेशा लगे रहते हैं। अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ वे ई काम कर ही नहीं सकते। हरदम अल्लाह के हुक्म पर कान लगाए ाते हैं। जिस काम का हुक्म मिला, ठीक-ठीक कर दिया। क्या मजाल जो सी हुक्म में कमी-बेशी कर दें, या मालिक की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कुछ कर ं। अल्लाह के काम में उनको कोई दख़ल नहीं है।

फ़रिश्ते अनगिनत हैं। उनकी ठीक गिनती तो अल्लाह ही को मालूम चन्द मशहूर फ़रिश्तों के नाम और उनके काम हमें भी बता दिए गए हैं।

हज़रत जिबरील (अलैहिस्सलाम)

हज़रत जिबरील (अलैहि॰) बहुत बड़े और मशहूर फ़रिश्ते हैं। वे बियों के पास अल्लाह का हुक्म लेकर आते थे। प्यारे नबी (सल्ल॰) को अल्लाह का पैग़ाम हज़रत जिबरील (अलैहि॰) ही ने पहुँचाया था।

अल्लाह के हुक्म से थोड़ा-थोड़ा करके क़ुरआन मजीद प्यारे नबी (सल्ल
के पास लाते थे। दीन की राह में जब प्यारे नबी (सल्ल॰) को बहुत दुः
पहुँचता था, तो अल्लाह की तरफ़ से आप ही आकर ढारस बँधाते थ
नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा, नमाज़ के औक़ात और दूसरी बहुत-सी ब
अल्लाह ने प्यारे नबी (सल्ल॰) को आप (अलैहि॰) ही के ज़रीए सिखा
कभी-कभी जब ज़्यादा दिनों तक हज़रत जिबरील (अलैहि॰) न आते थे,
प्यारे नबी (सल्ल॰) बेचैन हो जाते थे। वे आते तब तसल्ली होती।

प्यारे नबी (सल्ल॰) अल्लाह के आख़िरी रसूल हैं। आपके बाद उ
कोई दूसरा नबी या रसूल नहीं आएगा। इसलिए हज़रत जिबरील का
काम पूरा हो चुका है। अब वे अल्लाह की बड़ाई और पाकी बयान क
में लगे रहते हैं।

❷ हज़रत मीकाईल (अलैहि॰)

हज़रत मीकाईल (अलैहि॰) अल्लाह के दूसरे मशहूर फ़रिश्ते हैं। इन
ज़िम्मे सबको रोज़ी पहुँचाना है। अल्लाह के हुक्म से वही हवा चलाते, पा
बरसाते और हर जानदार को रोज़ी पहुँचाते हैं। लेकिन दूसरे सब फ़रिश
की तरह वे भी मजबूर और बेबस हैं। अल्लाह का हुक्म न हो तो अप
तरफ़ से कुछ नहीं कर सकते, न हवा चला सकते हैं, न पानी बरसा सक
हैं और न किसी को अनाज का एक दाना दे सकते हैं। यह सब कुछ अल्ल
के ही हुक्म से होता है।

❸ हज़रत इसराफ़ील (अलैहि॰)

हज़रत इसराफ़ील (अलैहि॰) के ज़िम्मे सूर फूँकना है। सूर की आवा
बहुत ही तेज़ और भयानक होगी। वे क़ियामत के दिन दो बार सूर फूँकें
पहली फूँक में सारा जहान मर-मिटकर ख़त्म हो जाएगा। दूसरी फूँक में स

ाले-पिछले, मुर्दे जी उठेंगे और हिसाब-किताब के लिए हश्र के मैदान में ा होंगे।

हज़रत इज़राईल (अलैहि॰)

हज़रत इज़राईल (अलैहि॰) के ज़िम्मे सारे जानदारों की जान निकालना लेकिन अपनी तरफ़ से वे एक चींटी भी नहीं मार सकते। अल्लाह ने हर ् की मौत का वक़्त तय कर दिया है। छोटा हो या बड़ा जब भी जिसका त पूरा हो जाता है, अल्लाह तआ़ला हुक्म देता है और हज़रत इज़राईल लैहि॰) उनकी जान निकाल लेते हैं।

छ दूसरे मशहूर फ़रिश्ते

इन चार के अलावा कुछ और मशहूर फ़रिश्ते भी हैं, इनके कामों के ाज़ से उनको नाम दिए गए हैं।

किरामन-कातिबीन

किरामन-कातिबीन यानी 'लिखनेवाले बुज़ुर्ग फ़रिश्ते'। हममें से हर ् के साथ अल्लाह ने दो-दो फ़रिश्ते लगा दिए हैं। हम जहाँ कहीं भी जाएँ जिस हाल में भी हों, वे फ़रिश्ते हमारे साथ-साथ रहते हैं। हमारा हर एक म उनकी नज़र में होता है। हमारी एक-एक बात वे सुनते और लिखते े हैं। हमारी कोई नेकी या बदी ऐसी नहीं होती, जिसे वे लिख न लें। यामत के दिन हमारा सारा कच्चा-चिट्ठा हमारे सामने होगा और हम में हर एक खुद देख लेगा कि सारी उम्र उसने क्या कुछ नेकी और बदी ाई है।

इसी लिए तो हम मुसलमान तनहाई में भी अल्लाह तआ़ला से डरते े हैं और कोई काम उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ नहीं करते। कौन अक़्लमन्द ना आमालनामा काला कराएगा!

❷ मुनकर-नकीर

मुनकर-नकीर का अर्थ है अजनबी फ़रिश्ते। ये वे दो फ़रिश्ते हैं मरने के बाद हर एक के पास जाते हैं और उसके दीन के बारे में कुछ ब पूछते हैं। चूँकि वे अचानक पहुँचते हैं और उनकी शक्ल-सूरत का पहले कोई इल्म नहीं होता, इसलिए मुनकर-नकीर कहलाते हैं।

❸ रिज़वान और मालिक

अल्लाह तआ़ला ने जन्नत और दोज़ख़ की देखभाल के लिए दो फ़रिश्तों को नियुक्त किया है। जन्नत के दारोग़ा का नाम 'रिज़वान' है ओ दोज़ख़ के दारोग़ा का नाम 'मालिक' है।

❹ ह-फ़-ज़ह

ह-फ़-ज़ह का अर्थ है हिफ़ाज़त करनेवाले। यह उन फ़रिश्तों का न है जो लोगों को दुख-दर्द से बचाने के लिए मुक़र्रर हैं।

❺ कुछ फ़रिश्ते हमारी नमाज़ों और अच्छी मजलिसों में आते हैं, ताकि इ शरीक होनेवालों की अल्लाह के सामने गवाही दें।

ग़रज़ तरह-तरह के फ़रिश्ते हैं और अल्लाह तआ़ला ने तरह-तरह काम उनके सुपुर्द कर रखे हैं, मगर इनके अपने इख़्तियार में कुछ नहीं फ़रिश्ते जो कुछ करते हैं, अल्लाह तआ़ला के हुक्म ही से करते हैं।

शब्दार्थ और टिप्पणी

इख़्तियार	=	अधिकार
ओझल	=	जो नज़र न आए
मजाल	=	ताक़त, हिम्मत
ग़रज़	=	तात्पर्य, मतलब

औक़ात	=	वक़्त का बहुवचन
नूर	=	रौशनी, प्रकाश
दख़ल	=	पहुँच, रसाई
सूर	=	बिगुल
मुक़र्रर करना	=	किसी काम के लिए रखना, नियुक्त करना
आमालनामा	=	कर्मपत्र, वह रजिस्टर जिसमें आदमी के अच्छे-बुरे काम लिखे होंगे।
कान लगाए रखना	=	हुक्म और बात सुनने के लिए तैयार रहना
ढारस बँधाना	=	हिम्मत दिलाना, तसल्ली देना
सुपुर्द करना	=	हवाले करना, क़ब्ज़े में देना

अभ्यास

क) संक्षिप्त उत्तर लिखो :

1. फ़रिश्ते कौन हैं?
2. फ़रिश्ते किस चीज़ से बनाए गए हैं?
3. इनसानों और फ़रिश्तों में क्या फ़र्क़ है?
4. प्यारे नबी (सल्ल॰) को अल्लाह का सन्देश कौन पहुँचाता था?

ख) नीचे फ़रिश्तों के काम लिखे गए हैं, तुम सामने बने कोष्ठकों के अन्दर उनके नाम लिखो :

1. सबको रोज़ी पहुँचाते हैं। ( )
2. इनके ज़िम्मे सारे जानदारों की जान निकालना है। ( )
3. लोगों को दुख-दर्द से बचाने के लिए मुक़र्रर हैं। ( )
4. वे क़ियामत के दिन सूर फूकेंगे। ( )

(ग) नीचे लिखी बातों को ग़ौर से पढ़ो, जो बातें सही हों उनपर सही (√) व निशान और जो ग़लत हों उनपर ग़लत (×) का निशान लगाओ :

1. अल्लाह तआ़ला हुक्म देता है और हज़रत इसराफ़ील (अलैहि॰) झटपट उसकी जान निकाल लेते हैं। (
2. हम मुसलमान तन्हाई में भी अल्लाह से डरते रहते हैं। (
3. सूर की पहली फूँक में सारे अगले-पिछले, मुर्दे जी उठेंगे। (
4. दूसरी फूँक में सारा जहान मर-मिटकर ख़त्म हो जाएगा। (
5. अल्लाह के कामों में फ़रिश्तों का भी दख़ल है। (
6. अल्लाह ने हर एक की मौत का वक़्त तय कर दिया है। (
7. कुछ फ़रिश्ते हमारी नमाज़ों और अच्छी-भली मजलिसों में आते हैं। (
8. फ़रिश्ते हमारी तरह खाते-पीते और सोते-जागते हैं। (

कुछ और काम

रात को सोते समय अपने दिन भर के कामों पर ग़ौर करो कि आज तुम कौन-कौन से नेक काम किए और कौन-से नेक काम करने से रह गए।

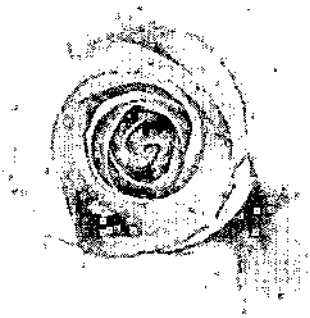

ख़ुदा एक है

गर दो ख़ुदा होते संसार में, तो दोनों बला होते संसार में।
तरनाक होता ज़माने का रंग, हुआ करती हर रोज़ दोनों में जंग।
धर एक कहता कि "मेरी सुनो," उधर एक कहता, "मियाँ चुप रहो।"
धर एक कहता कि "भाई मेरे, रहे, आज दुनिया में बारिश रहे।"
गड़कर उधर दूसरा बोलता, "नहीं! आज है धूप का फ़ैसला।"
र्ज़ जिस तरह यह उसे रोकता, उसी तरह वह भी इसे टोकता।
गड़कर छड़ी मारता एक ख़ुदा, तो फिर दूसरा उस पे चढ़ दौड़ता।
दा दोनों लड़ते-लड़ाते यूँ ही, शबो-रोज़ फ़ितने उठाते यूँ ही।
मीं काँपती, आसमाँ काँपता, लड़ाई से सारा जहाँ काँपता।
दुनिया के ये बहरो-बर खुश्को-तर, बहुत जल्द हो जाते ज़ेरो-ज़बर।
तारे, ये तारों के झुरमुट में चाँद, बुरी तरह गिर पड़ते हो-हो के माँद,
हम होते बच्चो! जहाँ में न तुम, सिरे से जहाँ बल्कि ख़ुद होता गुम।

हक़ीक़त में सबका ख़ुदा एक है,
ख़ुदा को जो माने वही नेक है।

—मुहम्मद नियाज़

❁❁❁

8

इस्लाम के अरकान (खम्भे)

हमारा दीन (धर्म) इस्लाम है। इस्लाम का अर्थ है सिर झुका अल्लाह का कहा मानना, उसके बताए हुए ढंग से रहना-सहना। सब लो का भला इसी में है कि इस्लाम को अपनाएँ और अल्लाह के कहने ठीक-ठीक चलें। इस्लाम को अपनाने के लिए नीचे की पाँच बातों अपनाना ज़रूरी है। इन पाँचों की वही हैसियत है जो एक इमारत में ख की होती है। खम्भे न हों तो कोई इमारत खड़ी नहीं हो सकती या ख गिर जाएँ तो इमारत ही गिर जाएगी। दीने-इस्लाम (इस्लाम-धर्म) इमारत जिन पाँच अरकान पर खड़ी हुई है वे ये हैं :

1. ईमान की गवाही 2. नमाज़ 3. रोज़ा 4. ज़कात 5. हज।

❶ ईमान की गवाही

इस्लाम का पहला रुक्न ईमान की गवाही देना है यानी इस बात दिल से मानना और ज़बान से कहना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद न हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अशहदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्-न मुहम्मदन अब्दु रसूलुहू।

अर्थात् मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इलाह (इष्ट पू नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्ल॰) उसके बन्दे और रसूल

इसी को शहादत का कलिमा भी कहते हैं। इसके बिना अल्लाह के
हे पर हम किस तरह चल सकेंगे? प्यारे नबी (सल्ल॰) की बताई हुई सीधी
ाह को हम किस तरह अपना सकेंगे? ईमान न हो तो इनसान अल्लाह का
रमाँबरदार नहीं रह सकता है।

❷ नमाज़

इस्लाम का दूसरा रुक्न नमाज़ है। वक़्त की पाबन्दी के साथ
ोक-ठीक नमाज़ अदा करना ज़रूरी है। नमाज़ ही तो हमें दिन-रात में पाँच
ार यह याद दिलाती है कि हम अल्लाह के बन्दे और ग़ुलाम हैं, हमें उसी
क हुक्म पर चलना चाहिए, भूल-चूक हो गई हो तो माफ़ी माँगनी चाहिए,
ाइन्दा नाफ़रमानी से बचना चाहिए। जो नमाज़ का पाबन्द न होगा, वह
र बात में अल्लाह और उसके हुक्म को कैसे याद रख सकेगा, फिर तो
ह दुनिया में भी भटकता फिरेगा और अपनी आख़िरत भी बिगाड़ लेगा।
सी लिए नमाज़ की बड़ी ताकीद आई है। क़ियामत के दिन अल्लह तआ़ला
बसे पहले नमाज़ ही के बारे में पूछेगा और बे-नमाज़ी को सख़्त अज़ाब
गा।

❸ रोज़ा

इस्लाम का तीसरा रुक्न रोज़ा है। हमें रमज़ान के रोज़े रखने का हुक्म
। हर साल रमज़ान में हम बराबर एक माह रोज़ा रखते हैं। अल्लाह के
ुक्म से दिन भर खाना-पीना छोड़ देते हैं।

❹ ज़कात

इस्लाम का चौथा रुक्न ज़कात है यानी हर साल अपनी कमाई में से
एक मुक़र्ररा रक़म अल्लाह की राह में निकाल देना फ़र्ज़ है। धन-दौलत और
रुपये-पैसे की मुहब्बत भी अक्सर लोगों को सीधी राह से भटका देती है।

ज़कात हमारे दिलों से माल की मुहब्बत निकाल कर अल्लाह की मुहब्बत बिठाती है, ताकि हम माल के जाल में फँसकर अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी न कर बैठें।

❺ हज

इस्लाम के अरकान में से पाँचवाँ रुक्न हज है। हज एक ऐसी इबादत है, जिसमें तमाम जानी व माली इबादतों की रूह मौजूद है। हज इस्लाम का वह रुक्न है, जिसमें मुसलमान बैतुल्लाह (अल्लाह के घर काबा) की ज़ियारत करते हैं। सेहतमन्द और दौलतमन्द मुसलमानों पर ज़िन्दगी में कम-से-कम एक बार हज करना फ़र्ज़ है। हज दरअस्ल एक मोमिन बन्दे का ईमान व इख़लास के साथ अपना सब कुछ अल्लाह की राह में क़ुरबान कर देने का नाम है।

अल्लाह की मर्ज़ी पर चलने के लिए ये पाँचों बातें बहुत ज़रूरी हैं इसी लिए इन्हें दीन के अरकान कहते हैं। अरकान के मानी सुतून या खम्भों के हैं। इन्हीं अरकान पर दीने-इस्लाम की पूरी इमारत खड़ी है।

शब्दार्थ और टिप्पणी

अरकान	=	रुक्न का बहुवचन, सुतून, खम्भे
माबूद	=	इष्ट पूज्य, जिसकी इबादत की जाए
इलाह	=	पूज्य, उपास्य, माबूद

अभ्यास

क) संक्षिप्त उत्तर दो :

1. इस्लाम की इमारत कितने अरकान पर खड़ी हुई है और वे क्या-क्या हैं?
2. कलिम-ए-शहादत किसे कहते हैं?
3. नमाज़ हमें क्या याद दिलाती है?
4. साल में कितने रोज़े फ़र्ज़ हैं?
5. हम ज़कात क्यों निकालते हैं?
6. मरने के बाद सबसे पहले हमसे किस चीज़ के बारे में पूछा जाएगा?

ख) नीचे की बातों को ग़ौर से पढ़ो। फिर सही बात पर सही का निशान (√) और ग़लत पर बात पर ग़लत का निशान (×) लगाओ :

1. ईमान न हो तो इनसान अल्लाह का फ़रमाँबरदार नहीं रह सकता। ( )
2. तिलावत (क़ुरआन-पाक) ही तो हमें दिन-रात में पाँच बार यह याद दिलाती है कि हम अल्लाह के बन्दे और गुलाम हैं। ( )
3. मरने के बाद अल्लाह तआ़ला सबसे पहले रोज़े के बारे में पूछेगा। ( )
4. जो नमाज़ का पाबन्द होगा वह हर बात में अल्लाह और उसके हुक्म को याद रखेगा। ( )
5. धन-दौलत और रुपये-पैसे की मुहब्बत अक्सर लोगों को बुरी राह की तरफ़ ले जाती है। ( )
6. हर साल रमज़ान में हम बराबर दो माह अल्लाह के हुक्म से दिन भर खाना-पीना छोड़ देते हैं। ( )
7. ज़िन्दगी में कम-से-कम तीन बार हज करना चाहिए। ( )

(ग) तरतीब के लिहाज़ से मुनासिब जोड़े लगाओ :

1.	पहला रुक्न	ज़कात
2.	दूसरा रुक्न	हज
3.	तीसरा रुक्न	ईमान की गवाही
4.	चौथा रुक्न	नमाज़
5.	पाँचवाँ रुक्न	रोज़ा

(घ) नीचे कई शब्द दिए गए हैं, इनमें से सही जवाब चुनकर ख़ाली जगहों व भरो :

(अरकान, माबूद, सख़्त अज़ाब, ज़कात, इस्लाम)

1. सब लोगों का भला इसी में है कि.....को अपनाएँ।
2. अल्लाह के सिवा कोई.....नहीं।
3. अल्लाह तआ़ला बेनमाज़ी को .....देगा।
4. .....हमारे दिलों से माल की मुहब्बत निकालकर अल्ला की मुहब्बत बिठाती है।
5. .....के मानी सुतूनों या खम्भों के हैं।

कुछ और काम

कलिमा-ए-शहादत और उसका अर्थ याद करो और ज़बानी सुनाओ।

नमाज़

नमाज़ दीन का सुतून है। जिसने नमाज़ को क़ायम रखा, उसने पूरे ा को क़ायम रखा, जिसने नमाज़ छोड़ दी, उसने पूरे दीन को ढा ा।

नमाज़ हमें अल्लाह का फ़रमाँबरदार बनाती है। जो नमाज़ नहीं पढ़ता, अल्लाह का फ़रमाँबरदार नहीं बन सकता। मुस्लिम और काफ़िर में सिर्फ़ ाज़ का फ़र्क़ है।

क़ियामत में सबसे पहले नमाज़ के बारे में पूछा जाएगा। अगर नमाज़ ूल हो गई तो तमाम नेकियों का बदला मिलेगा, वरना सारे भले काम कर दिए जाएँगे।

नमाज़ जन्नत की कुंजी है। नमाज़ प्यारे नबी (सल्ल॰) की आँखों की क है। नमाज़ ही हम लोगों की मेराज है। मेराज में प्यारे नबी (सल्ल॰) अल्लाह तआ़ला ने अपने पास बुलाया था। नमाज़ में हम भी अल्लाह सामने खड़े होते हैं और अपने रब से बातें करते हैं।

नमाज़ हमें बुराइयों और बेहयाइयों से बचाती है। यही हमें नेक ाती है और हमारी भूल-चूक माफ़ कराती है। इसी के ज़रीए से हम दीन-ाया की सारी भलाइयाँ समेटते हैं।

ाज़ की ताकीद

नमाज़ की इसी अहमियत की वजह से इसपर बहुत ज़ोर दिया गया क़ुरआन मजीद में तो सात सौ से ज़्यादा जगहों पर नमाज़ का ज़िक्र

आया है। इसी से पता चलता है कि अल्लाह तआ़ला को नमाज़ किस
पसन्द है। प्यारे नबी (सल्ल॰) ने भी नमाज़ को सही वक़्त पर अदा क
की बड़ी ताकीद की है। आप (सल्ल॰) ने नमाज़ को दीन का सुतून, अप
आँखों की ठंडक और मोमिन का नूर बताया है। इसे इस्लाम की पहच
और बेहतरीन जिहाद कहा है।

नमाज़ छोड़ने की सज़ा बहुत सख़्त है। बेनमाज़ी के लिए बड़ी तब
है। प्यारे नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया है—

"अज़ान की आवाज़ सुनकर जो लोग घर से नहीं निकलते,
मेरा जी चाहता है कि जाकर उनके घरों में आग लगा दूँ।"

प्यारे नबी (सल्ल॰) का कहना है कि बच्चे सात साल के हो जाएँ
उन्हें नमाज़ की ताकीद करो। दस साल के हो जाएँ तो नमाज़ से ग़फ़
की सूरत में उन्हें सज़ा दो। प्यारे नबी (सल्ल॰) सबके लिए रहमत बन
आए थे। आप (सल्ल॰) ने बच्चों को कभी नहीं पीटा। आप बच्चों से बे
प्यार करते थे। फिर भी आप (सल्ल॰) ने नमाज़ के मामले में बच्चों को स
तक देने का हुक्म दिया है। इससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि नम
कितनी ज़रूरी है।

नमाज़ के औक़ात और रक्अ़तें

दिन-रात में पाँच वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज़ हैं।

❶ फ़ज्र

सुबह सादिक़ यानी पौ फटने से लेकर सूरज निकलने से कुछ पह
तक फ़ज्र का वक़्त है। सूरज का ज़रा-सा किनारा भी निकल आए तो फ़
का वक़्त जाता रहेगा। फिर तो अच्छी तरह धूप निकल आने के बाद 'क़ज़
पढ़नी पड़ेगी।

फ़ज्र की नमाज़ में कुल चार रक्अ़तें अदा की जाती हैं। पहले दो
क्अ़त सुन्नते-मुअक्कदा, फिर दो रक्अ़त 'फ़र्ज़'। सुन्नतें भी फ़र्ज़ ही की
रह अदा की जाती है, फ़र्क़ यह है कि फ़र्ज़ नमाज़ हम इमाम के पीछे
माअत से अदा करते हैं। नमाज़ से पहले तकबीर या इक़ामत कही जाती
और इमाम 'अल-हम्द शरीफ़' और उसके साथ कोई सूरा या क़ुरआन
। कोई तीन छोटी आयतें या एक बड़ी आयत बुलन्द आवाज़ से पढ़ता
। सुन्नतें जमाअ़त से नहीं पढ़ी जातीं। बल्कि हर एक अलग-अलग और
ाहिस्ता आवाज़ में अदा करता है। सुन्नतों से पहले इक़ामत भी नहीं कही
ाती।

) ज़ुह्र

सूरज ढलने के बाद से 'ज़ुह्र' का वक़्त शुरू होता है और 'अस्र' से
ले तक रहता है। लेकिन अच्छा यही है कि अस्र का वक़्त शुरू होने से
ले ज़ुह्र की नमाज़ अदा कर ली जाए।

ज़ुह्र में बारह रक्अ़तें हैं। पहले चार रक्अ़त सुन्नते-मुअक्कदा, फिर
र रक्अ़त फ़र्ज़, फिर दो रक्अ़त सुन्नते-मुअक्कदा, फिर दो रक्अ़त नफ़्ल।

फ़र्ज़ नमाज़ और सुन्नतों में एक फ़र्क़ यह भी है कि फ़र्ज़ की आख़िरी
नों रक्अ़तों में सिर्फ़ अल-हम्द शरीफ़ (सूरा फ़ातिहा) पढ़ते हैं, जबकि
नत की आख़िरी दो रक्अ़तों में भी अल-हम्द शरीफ़ के साथ एक-एक
ा मिलाते हैं।

अस्र

डेढ़-दो घंटा दिन रहने से सूरज डूबने तक अस्र का वक़्त रहता है।
र अच्छा यही है कि सूरज के पीला पड़ने से पहले-पहले अस्र की नमाज़
ा कर ली जाए, वरना 'मकरूह' हो जाएगी।

अस्र में आठ रक्अ़तें हैं। पहले चार रक्अ़तें सुन्नते-ग़ैर मुअक्कद फिर चार रक्अ़तें फ़र्ज़। ज़ुह्र की फ़र्ज़ नमाज़ की तरह अस्र की नमाज़ भी क़िरअत आहिस्ता-आहिस्ता की जाती है।

❹ मग़रिब

मग़रिब का वक़्त सूरज डूब जाने के बाद से पश्चिम की सुर्ख़ी य शफ़क़ की सफ़ेदी ग़ायब होने तक रहता है, मगर अच्छा यही है कि सूर डूबने के बाद मग़रिब की नमाज़ अदा करने में जल्दी की जाए वरना मकरू हो जाने का डर है।

मग़रिब की नमाज़ में कुल सात रक्अ़तें हैं—पहले तीन रक्अ़तें फ़ज़ इसके बाद दो रक्अ़तें सुन्नते-मुअक्कदा और फिर दो रक्अ़तें नफ़्ल।

❺ इशा

इशा की नमाज़ का वक़्त मग़रिब की नमाज़ का वक़्त गुज़रने के बा रात का अंधेरा अच्छी तरह छा जाने से शुरू होता है और सुबह सादिक़ (प फटने) से पहले तक रहता है। लेकिन आधी रात से पहले अदा कर ले बेहतर है, वरना मकरूह जो जाएगी। इशा की नमाज़ में सतरह रक्अ़ हैं—

पहले चार रक्अ़तें सुन्नते-ग़ैर-मुअक्कदा, फिर चार रक्अ़तें फ़र्ज़, फि दो रक्अ़तें सुन्नते-मुअक्कदा, फिर दो रक्अतें नफ़्ल, फिर तीन रक्अ़ वित्र[1], फिर दो रक्अ़तें नफ़्ल। 'वित्र' की पहली दो रक्अ़तें तो और नमाज़ ही की तरह पढ़ी जाती हैं, मगर दूसरी रक्अ़त में 'अत्तहियात' (तशह-हुद

1. कुछ लोग वित्र में एक ही रक्अ़त और कुछ लोग पाँच रक्अ़तें पढ़ते हैं और दुआ-ए-क़ुनूत आख़ि रुकूअ के बाद हाथ उठाकर पढ़ते हैं। कुछ लोग तीन रक्अ़तें भी इसी तरह पढ़ते हैं।
2. कुछ लोग दूसरी रक्अ़त के बाद।

कर खड़े हो जाते हैं और 'सूरे फ़ातिहा' के बाद कोई एक सूरा या चन्द यतें पढ़ते हैं। फिर 'अल्लाहु अकबर' कहते हुए हाथ उठाते हैं और फिर ा बाँधकर दुआ-ए-क़ुनूत पढ़ते हैं। उसके बाद 'अल्लाहु अकबर' कहते रुकूअ़ में जाते हैं।

ाज़े-जुमा

जुमे की नमाज़ हर जुमे को ज़ुह्र के वक़्त होती है। हम लोग नहा-कर कपड़े बदलते हैं। जुमे की नमाज़ हम हमेशा जामा मस्जिद में अदा ते हैं। पहले चार रक्अ़त सुन्नते-मुअक्कदा पढ़ते हैं। जब इमाम साहब कर मिम्बर पर बैठ जाते हैं तो मुअज़्ज़िन दूसरी अज़ान देता है। अज़ान बाद इमाम साहब ख़ुत्बा देते हैं। ख़ुत्बा ख़त्म करके दो रक्अ़त फ़र्ज़ ते हैं। ये दो रक्अ़तें सब लोग जमाअत से अदा करते हैं। फ़र्ज़ के बाद पहले चार रक्अ़त सुन्नते-मुअक्कदा[1], फिर दो रक्अ़त सुन्नते-मुअक्कदा ा करते हैं। आख़िर में दो रक्अ़त नफ़्ल भी अदा कर ली जाए तो ज़्यादा ाब है। जुमे के दिन ज़ुह्र की नमाज़ की जगह जुमे की नमाज़ होती है। लिए उस दिन ज़ुह्र की नमाज़ पढ़ने की ज़रूरत नहीं रहती।

न वक़्तों में नमाज़ पढ़ना मना है

सूरज निकलते या डूबते वक़्त या ठीक दोपहर को, जब सूरज कुल सिर पर होता है, नमाज़ पढ़ना मना है। इसी तरह फ़ज्र के वक़्त सुन्नतों के अलावा और अस्र और मग़रिब की नमाज़ों के बीच में कोई ल नमाज़ अदा करना भी मना है।

---

[1] कुछ लोग फ़र्ज़ के बाद चार ही रक्अ़त या दो ही रक्अ़त सुन्नते-मुअक्कदा पढ़ते हैं।

शब्दार्थ और टिप्पणी

रद्द करना	=	वापस करना, फेरना
जन्नत की कुंजी	=	इसके ज़रीए से हम जन्नत में जा सकते
ताकीद करना	=	ज़ोर देना, कोई बात ज़ोर देकर कहना
सुन्नते-मुअक्कदा	=	वह अमल जिसे नबी (सल्ल॰) ने हमेशा कि हो और बिना उज़्र (मजबूरी) उसको कभ छोड़ा हो।
सुन्नते-ग़ैर मुअक्कदा	=	वह अमल जिसे प्यारे नबी (सल्ल॰) ने क किया हो और किसी उज़्र के बग़ैर कभी भी दिया हो।
नफ़्ल	=	वह अमल जिसको नबी (सल्ल॰) ने क कभी किया हो, अक्सर न किया हो।

अभ्यास

(क) संक्षिप्त उत्तर दो :

1. मुस्लिम और काफ़िर में किस चीज़ का फ़र्क़ है?
2. नमाज़ के क्या-क्या फ़ायदे हैं?
3. वित्र की नमाज़ का तरीक़ा क्या है?
4. किन वक़्तों में नमाज़ अदा करना मना है?
5. जुमे की नमाज़ में हम कुल कितनी रक्अ़तें फ़र्ज़ और सुन्नतें अ करते हैं?
6. जुमे की नमाज़ का तरीक़ा क्या है?

नीचे लिखी हुई हदीसों से हमें क्या नसीहत मिलती है?

1. अज़ान की आवाज़ सुनकर जो लोग घर से नहीं निकलते, मेरा जी चाहता है कि जाकर उनके घरों में आग लगा दूँ।
2. बच्चे सात साल के हो जाएँ तो उन्हें नमाज़ की ताकीद करो और दस साल के हो जाएँ तो नमाज़ से ग़फ़लत की सूरत में उन्हें सज़ा दो।

नीचे दी गई तालिका में नमाज़ों के सामने बने हुए ख़ानों में उनके औक़ात और उनका कब पढ़ना बेहतर है, लिखो :

ाज़ों के नाम	नमाज़ों के औक़ात कब से कब तक	कब पढ़ना बेहतर है
्र		
ारिब		
ज्र		
त्र		
ा		
ा		

नीचे एक तालिका बनाकर उसमें नमाज़ों के नाम दे दिए गए हैं। तुम उनके सामने बने ख़ानों में फ़र्ज़, सुन्नत और वित्र की रकुअ़तों की तादाद लिखो :

ाज़ों के नाम	फ़र्ज़	फ़र्ज़ से पहले	फ़र्ज़ के बाद	वित्र
्र				
ा				
ा				
ा				
ारिब				
ा				

10

नमाज़ की शर्तें

नमाज़ अदा करने से पहले कुछ बातों का पाया जाना ज़रूरी है। नमाज़ की शर्तें कहते हैं। अगर इनमें से एक शर्त भी पूरी न हो तो न दुरुस्त नहीं होगी।

नमाज़ की शर्तें ये हैं–

① बदन का पाक होना, इसमें वुज़ू भी शामिल है,

② कपड़ों का पाक होना,

③ नमाज़ पढ़ने की जगह का पाक होना,

④ सतर (शरीर के वे अंग जिनका छिपाना आवश्यक है।) ढाँ

⑤ वक़्त के अन्दर पढ़ना,

⑥ क़िबूले (काबा) की तरफ़ रुख़ करना,

⑦ नमाज़ की नीयत करना।

नमाज़ शुरू करने से पहले हम ये शर्तें ज़रूर पूरी कर लेते हैं :

❶ अगर बदन के किसी हिस्से पर नापाकी हो तो उसे धो डालते इस्तिंजा सलीक़े से क़रते हैं। पूरा बदन पाक करना हो तो नहा लेते हैं। वुज़ू की ज़रूरत हो तो सही तरीक़े से अच्छी तरह वुज़ू कर लेते हैं। जानते हैं कि पूरी नमाज़ पढ़ भी लें और वुज़ू न हो तो नमाज़ ही नहीं ह ग़र्ज़ बहुत ही साफ़-सुथरे और बावुज़ू होकर अल्लाह के सामने जाते गंदगी और नापाकी से हमें नफ़रत है। हम अपनी नमाज़ ख़राब करना चाहते।

❷ कपड़े अगर नापाक हों तो हम नमाज़ से पहले उन्हें भी पाक कर ते हैं। पेशाब, पाख़ाना, नाली की कीचड़ या और कोई नापाकी लग जाए ो पाक और साफ़ पानी से तीन बार धोकर ख़ूब निचोड़ते हैं। अगर ापाकी ज़्यादा लगी हो या धोने का मौक़ा न हो तो कपड़े बदल लेते हैं। ापाक कपड़ों में हम कभी अल्लाह तआ़ला के सामने नहीं जाते। ऐसे पड़ों में नमाज़ ही नहीं होती।

❸ नमाज़ चाहे चटाई, मुसल्ले वग़ैरह पर पढ़नी हो या ज़मीन पर, सके पाक-साफ़ होने की तरफ़ से भी इत्मीनान कर लेते हैं। किसी नापाक गह नमाज़ के लिए नहीं खड़े हो जाते। हम जानते हैं कि बदन और कपड़े ाक होने पर भी जगह की नापाकी से नमाज़ ठीक नहीं होगी।

❹ लिबास भी हम पूरा पहनकर नमाज़ पढ़ते हैं। अल्लाह के दरबार बेढंगेपन से नहीं जाते। सिर पर टोपी होती है, बदन पर ऐसा कुर्ता या मीस कि आस्तीनों से कुहनियाँ ढकी रहें। पाजामा या तहबन्द वग़ैरह ऐसा ासे घुटने ढके रहें और छिपाने की जगहें (सतर) अच्छी तरह छिपी रहें। कसी मजबूरी से पूरा लिबास न पहन सकें तो नाफ़ से घुटनों तक ज़रूर ही ाँक लेते हैं, क्योंकि नाफ़ से घुटनों तक बदन ढाँकना शर्त है। हमें मालूम कि बदन के ये हिस्से खुले हों तो मर्दों की नमाज़ ही न होगी। औरतों ो नमाज़ के लिए पूरा जिस्म ढाँकना शर्त है। इसलिए अम्मी जान और ापा जान तो दुपट्टे वग़ैरह से अपना बदन इतना ढाँपकर नमाज़ पढ़ती हैं क चेहरे, हथेलियों और टख़नों से नीचे पैर के सिवा बदन का कोई हिस्सा खाई नहीं देता। बदन का इससे ज़्यादा हिस्सा खुलने पर औरतों की नमाज़ ा न होगी।

❺ नमाज़ों का वक़्त अल्लाह ने मुक़र्रर कर दिया है। हर नमाज़ हम सके वक़्त के अन्दर ही अदा करते हैं। नमाज़ शुरू करने से पहले हम ख़ूब

इत्मीनान कर लेते हैं कि वक़्त हो गया है या नहीं। यह नहीं कि दिन ढल से पहले ही ज़ुह्र की नमाज़ पढ़ ली या किसी और वक़्त ज़ल्दी कर बैठे बल्कि वक़्त हो जाने पर पढ़ते हैं और जब उसका वक़्त रहता है उस अन्दर ही अदा कर लेते हैं। कोई नमाज़ वक़्त शुरू होने से पहले या वक़्त ख़त्म होने के बाद अदा नहीं होती। इसी लिए हम वक़्त का बड़ा ख़याल रखते हैं। न तो जल्दबाज़ी करते हैं कि वक़्त से पहले पढ़ लें, न बिला वजह देर करते हैं कि नमाज़ का वक़्त ही चला जाए।

❻ काबा हमारा क़िब्ला है। नमाज़ हमेशा हम क़िब्ले की तरफ़ रुख़ करके पढ़ते हैं। मस्जिदें तो सब क़िब्ले के रुख़ बनाई ही जाती हैं, इसलिए वहाँ तो आसानी है, लेकिन जब सफ़र पर जाते हैं और क़िब्ले का रुख़ पहचानने में दिक़्क़त होती है तो हम बेझिझक किसी जाननेवाले से पूछ लेते हैं। जान-बूझकर किसी दूसरी तरफ़ मुँह करने से नमाज़ होती ही नहीं इसी लिए नमाज़ से पहले क़िब्ले का सही रुख़ अच्छी तरह मालूम कर लेते हैं।

❼ जिस वक़्त की भी नमाज़ अदा करनी हो या जिस नमाज़ की जितनी भी रक्अ़तें अदा करनी हों, नमाज़ शुरू करने से पहले उसकी नीयत कर लेते हैं यानी दिल में भी सोच लेते हैं, क्योंकि इसके बिना नमाज़ अदा नहीं होगी। अगर दिल में सोच लेने के साथ-साथ ज़बान से भी कह लिया जाए तो बेहतर है, लेकिन ज़बान से नीयत करना ज़रूरी नहीं।

इस तरह हम पाँचों वक़्त की नमाज़ से पहले ऊपर की सातों शर्तें ज़रूर पूरी कर लेते हैं। हम जानते हैं कि इन शर्तों को पूरा किए बग़ैर हमारी नमाज़ ही न होगी।

शब्दार्थ और टिप्पणी

शर्त	=	ज़रूरी, लाज़िम
इस्तिंजा	=	पेशाब या पाख़ाने के बाद ढेले या पानी से पाकी हासिल करना
मुसल्ला	=	नमाज़ पढ़ने की जगह, जानमाज़
बावुज़ू होकर	=	वुज़ू करके
क़िबला	=	जिस ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ी जाती है अर्थात काबा।
इमाम	=	नमाज़ पढ़ानेवाला

अभ्यास

) संक्षिप्त उत्तर दो :

1. नमाज़ की शर्तें तरतीब के साथ बताओ।
2. पूरा जिस्म पाक करना हो तो क्या करते हैं?
3. कपड़े या ज़िस्म पर पेशाब, पाख़ाना या नाली की गन्दगी लग जाए तो क्या करना चाहिए?
4. अल्लाह तआ़ला के दरबार में हमें कैसे जाना चाहिए?
5. अगर किसी के पास लिबास न हो तो नमाज़ पढ़ने के लिए बदन के कम-से-कम कितने हिस्से को ढाँकना ज़रूरी है?
6. नमाज़ में औरतों के लिए कितना बदन ढाँकना ज़रूरी है?
7. नमाज़ की नीयत से क्या मुराद है?

(ख) नीचे लिखी हुई बातों को ध्यान से पढ़ो। फिर सही बात पर सही का निश (√) और ग़लत बात पर ग़लत का निशान (×) लगाओ :

1. नमाज़ अदा करने से पहले दस शर्तों का पाया जाना ज़रूरी है।(
2. वुज़ू न हो तो नमाज़ हो जाएगी। (
3. हम साफ़ सुथरे और बावुज़ू होकर अल्लाह तआ़ला के सामने जाते हैं। (
4. गन्दगी और नापाकी से हमें नफ़रत है। (
5. अगर नापाकी ज़्यादा लगी हो और धोने का मौक़ा न हो, तो उसी कपड़े में नमाज़ पढ़ लेनी चाहिए। (
6. हम क़िब्ले की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ अदा करते हैं। (
7. कोई नमाज़ वक़्त शुरू होने से पहले या वक़्त ख़त्म होने के बाद अदा नहीं हुआ करती। (

(ग) ख़ाली जगहों को भरो :

1. नमाज़ों का वक़्त.....ने मुक़र्रर कर दिया है।
2. .....कपड़ों में हम कभी अल्लाह के सामने नहीं जा
3. अगर जिस्म के किसी हिस्से पर नापाकी हो तो.....
4. हम नमाज़ हमेशा.....रुख़ करके पढ़ते हैं।
5. नमाज़ शुरू करने से पहले.....में भी सोच लेते हैं।

कुछ और काम

अपने उस्ताद से पूछो कि सफ़र की हालत में क़िब्ले का र किस-किस तरीक़े से मालूम किया जा सकता है।

1

नमाज़ के अरकान

नमाज़ के अन्दर सात बातें ऐसी हैं कि उनमें से अगर एक भी छूट ए तो नमाज़ अदा ही नहीं होती। उन सातों की हैसियत वही है जो एक ारत में खम्भों की होती है। इसी लिए उन्हें नमाज़ के अरकान, सुतून या म्भे कहते हैं। वे सातों ये हैं :

① तकबीरे-तहरीमा —अल्लाहु-अकबर कहना,
② क़ियाम —खड़ा होना,
③ क़िरअत —कुछ क़ुरआन पढ़ना,
④ रुकूअ़ —झुकना,
⑤ सुजूद —सजदे करना,
⑥ क़अ़ूद-ए-अख़ीरा —नमाज़ के आख़िर में बैठना,
⑦ सलाम फेरना —जान-बूझकर नमाज़ ख़त्म करना।

नमाज़ पढ़ना हम जानते हैं। नीयत करके अल्लाहु-अकबर कहते हुए नों हाथ उठाते हैं। अब नमाज़ शुरू हो गई। अब न हम बातें कर सकते न चल-फिर सकते हैं, न इधर-उधर देख सकते हैं। अल्लाहु-अकबर कहते ; नमाज़ शुरू करना ज़रूरी है। इसके बग़ैर नमाज़ ही नहीं होगी।

अब नीयत बाँधने के बाद सीधे खड़े रहते हैं। कम से कम इतनी देर ड़े रहना ज़रूरी है जितनी देर में क़ुरआन मजीद से एक बड़ी या तीन छोटी यतें पढ़ी जा सकें। खड़े-खड़े हम क़ुरआन मजीद से इतनी क़िरअत ज़रूर ते हैं।

इसके बाद रुकूअ़ में जाते हैं।

फिर रुकूअ़ से खड़े होने के बाद सजदे में जाते हैं।

आख़िर में थोड़ी देर बैठकर अत्तहिय्यात, दुरूद शरीफ़ और क मसनून दुआ पढ़ते हैं।

यह सजदा करना और आख़िर में बैठना भी बहुत ज़रूरी है। अ इनमें से कोई रह गया तो नमाज़ न होगी। सबसे आख़िर में सलाम फे हैं। सलाम फेरना इस बात का एलान होता है कि हमने जान-बूझकर नमा ख़त्म कर दी और अब हम नमाज़ से बाहर हैं।

यह जान-बूझकर नमाज़ ख़त्म करना भी ज़रूरी है, वरना नमाज़ होगी। हम जानते हैं कि ये सब बातें बहुत ज़रूरी हैं। अगर इनमें से क छूट गई, तो नमाज़ न होगी।

इस तरह नमाज़ के ठीक-ठीक अदा होने के लिए कुल चौदह ब ज़रूरी हैं। सात नमाज़ शुरू करने से पहले, ये नमाज़ की शर्तें कहलाती और सात नमाज़ के अन्दर, ये नमाज़ के अरकान कहलाते हैं। इन चौ बातों में से अगर एक भी छूट जाए तो नमाज़ नहीं होगी। इसलिए हम इ बातों का बहुत ख़याल रखते हैं और क्यों न रखें? इनकी तरफ़ से बेपरवा करके आख़िर हम अपनी नमाज़ क्यों बिगाड़ लें।

अभ्यास

(क) उत्तर दो :

1. नमाज़ के अरकान कितने हैं?
2. तकबीरे-तहरीमा क्या है?
3. सलाम फेरना किस बात का एलान होता है?

4. हर रक्अ़त में कितना क़ुरआन पढ़ना (क़िरअ़त) ज़रूरी है?
5. अत्तहिय्यात और दुरूद कब पढ़ते हैं?

ब) नीचे नमाज़ की शर्तें और उसके अरकान एक साथ बेतरतीब लिख दिए गए हैं। इन्हें ग़ौर से पढ़ो, फिर तरतीब के साथ नमाज़ की शर्तें और नमाज़ के अरकान अलग-अलग साफ़-साफ़ लिखो :

अल्लाहु-अकबर कहना
कपड़ों का पाक होना
वक़्त के अन्दर पढ़ना
रुकूअ़ करना
खड़ा होना
बदन का पाक होना (इसमें वुज़ू भी शामिल है)
नमाज़ के आख़िर में बैठना
नमाज़ पढ़ने की जगह का पाक होना
जान-बूझकर नमाज़ ख़त्म करना
नमाज़ की नीयत करना
सजदा करना
क़िब्ले की तरफ़ रुख़ करना
सत्र ढाँपना
कुछ क़ुरआन मजीद पढ़ना

) ख़ाली जगहों को भरो :

1. नमाज़ के ठीक-ठीक अदा होने के लिए.....बातें ज़रूरी हैं।
2. सात नमाज़ शुरू करने से पहले। ये नमाज़ की..... कहलाती हैं।
3. और.....नमाज़ के अन्दर। ये नमाज़ के अरकान कहलाते हैं।
4. इन.....बातों में से अगर एक भी छूट जाए तो नमाज़ नहीं होगी।

के दिखाओ :

वुज़ू, क़ियाम, क़अ़दा, तकबीरे-तहरीमा, रुकूअ़, सजदा, सलाम फेरना।

12

नमाज़ में हम क्या पढ़ते हैं?

नमाज़ में जो कुछ पढ़ा जाता है उसका बहुत-सा हिस्सा तो मैं क का याद कर चुका। लेकिन ये सब अरबी में हैं, इसलिए ठीक से समझ न पाता था कि इनका मतलब क्या होता है और नमाज़ में अपने अल्लाह कहता क्या हूँ। इसलिए धीरे-धीरे मैंने इनका मतलब याद करना शु किया। अब अज़ान से लेकर सलाम फेरने तक जो कुछ पढ़ता हूँ उस मतलब याद हो गया है। आप भी सुनिए :

अज़ान :

اَللّٰهُ اَكْبَرُ

अल्लाहु अकबर (चार बार)

'अल्लाह सबसे बड़ा है।'

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

अश-हदु अल्ला इला-ह इल-लल्लाह (दो बार)

'मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं।'

اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अश-हदु अन-न मुहम्मदर-रसूलुल्लाह (दो बार)

'मैं गवाही देता हूँ कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) अल्लाह के रसूल

حَيَّ عَلَى الصَّلٰوة

हय-य अलस्सलाह (दो बार)

'आओ नमाज़ के लिए।'

حَیَّ عَلَی الْفَلَاحِ

हय-य अलल फ़लाह (दो बार)

'आओ भलाई के लिए।'

اَللّٰهُ اَكْبَرُ

अल्लाहु अकबर (दो बार)

'अल्लाह सबसे बड़ा है।'

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

ला इला-ह इल-लल्लाह

'अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं।'

ना : तकबीर (इक़ामत) के दोनों बोल

قَدْقَامَتِ الصَّلٰوةُ

क़द क़ा मतिस्सलात (दो बार)

(नमाज़ खड़ी हो गई)

ीर फ़ज्र की अज़ान के दोनों बोल

اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌمِّنَ النَّوْمِ

अस्सलातु ख़ैरुम-मिनन्नौम (दो बार)

(नमाज़ नींद से बेहतर है)

ो हय्य-अलल फ़लाह के बाद कहे जाते हैं, उनका मतलब भी मैंने याद र लिया है।

سُبْحٰنَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ وَتَبَارَکَ اسْمُکَ

وَتَعَالٰی جَدُّکَ وَلَآ اِلٰہَ غَیْرُکَ

सुब्हा-न कल्ला हुम-म व बि हम्दि-क, व तबा-र कस्मु-क,
व तआला जद्दु-क, व ला इला-ह ग़ैरु-क।

'पाक है तू ऐ मेरे अल्लाह! और तारीफ़ है तेरे लिए, बरकतवाला तेरा नाम, सबसे ऊँची है तेरी शान और कोई माबूद नहीं तेरे सिवा।'

तअव्वुज़ :

اَعُوْذُبِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ

अऊज़ु बिल्लाहि मिनश-शैतानिर-रजीम

'अल्लाह की पनाह माँगता हूँ मैं शैतान मरदूद से।'

तसमिया :

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

बिस-मिल्ला-हिर-रहमा-निर-रहीम

'शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो रहमान व रहीम है।'

रुकूअ़ की तस्बीह :

سُبْحَانَ رَبِّیَ الْعَظِیْمِ

सुब्हा-न रब्बि-यल अज़ीम

'पाक है मेरा रब जो सबसे बड़ा है।'

मीअ़ :

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ

समि-अल्लाहु लिमन हमिदह

'अल्लाह ने उसकी बात सुन ली जिसने उसकी तारीफ़ की।'

मीद :

رَبَّنَا لَکَ الْحَمْدُ

रब्बना ल-कल हम्द

'ऐ हमारे रब! तेरे ही लिए तारीफ़ है।'

दे की तस्बीह :

سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی

सुब्हा-न रब्बि-यल आला

'पाक है मेरा रब जो सबसे बरतर है।'

हुद :

اَلتَّحِیَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّیِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ اَیُّهَا النَّبِیُّ

وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَکَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَیْنَا وَعَلٰی عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِیْنَ ۝

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ۝

अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस्स-ल-वातु वत्तय्यिबातु, अस्सलामु अलै-अय्युहन-नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व ब-र-कातुहू, अस्सलामु अलैना व अ इबादिल्लाहिस-सालिहीन, अश्हदु अल्ला-इला-ह इल-लल्लाहु व अश्हदु अन मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह।

'हमारी सलामियाँ, हमारी नमाज़ें और सारी पाकीज़ा बातें अल्लाह लिए हैं। सलाम आपपर ऐ नबी! और अल्लाह की रहमत और उस बरकतें। सलामती हो हमपर और अल्लाह के नेक बन्दों पर। मैं गवाही दे हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम (सल्ल॰) अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं।'

दुरूद शरीफ़ :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ
عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝
اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ
عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝

अल्लाहुम-म सल्लि अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिन व सल्लै-त अला इबराही-म व अला आलि इबराही-म इन्न-क हमीदुम-मजी

अल्लाहुम-म बारिक अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिन व बारक-त अला इबराही-म व अला आलि इबराही-म इन्न-क हमीदुम-मजी

'ऐ अल्लाह! रहमत भेज हज़रत मुहम्मद और आपकी आल-औलाद , जिस तरह तूने रहमत भेजी हज़रत इबराहीम और उनकी आल-औलाद । बेशक तू बड़ा बुज़ुर्ग और बड़ी तारीफ़वाला है। ऐ अल्लाह! बरकत दे रत मुहम्मद को और आपकी आल-औलाद को जिस तरह तूने बरकत हज़रत इबराहीम और उनकी आल-औलाद को। बेशक तू बड़ा बुज़ुर्ग र बड़ी तारीफ़वाला है।'

द शरीफ़ के बाद की दुआ :

اَللّٰهُمَّ اِنِّی ظَلَمْتُ نَفْسِیْ ظُلْمًا كَثِيْرًاوَّ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ
اِلَّا اَنْتَ فَاغْفِرْلِیْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِیْ اِنَّكَ
اَنْتَ الْغَفُوْرُالرَّحِيْمُ ۝

ाम :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُاللّٰهِ

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह

'सलामती हो तुमपर और अल्लाह की रहमत।'

इनके अलावा जो दुआएँ और सूरतें रह गई हैं, अल्लाह ने चाहा तो का मतलब भी जल्द ही याद कर लूँगा। फिर तो नमाज़ में जो कुछ पढ़ूँगा सब समझ में आता जाएगा।

शब्दार्थ और टिप्पणी

रसूल	=	ईशदूत, पैग़म्बर
मरदूद	=	तिरस्कृत, फिटकारा हुआ, लानती
रहमान	=	दयालु, मेहरबान

रहीम = महादयालु, रहम करने वाला
बरतर = श्रेष्ठ, आला
आल-औलाद = सन्तान, बाल-बच्चे

अभ्यास

(क) ख़ाली जगहों को भरो :

1. अज़ान के शुरू में 'अल्लाहु-अकबर'..... बार पढ़ते हैं
2. 'अल्लाहु-अक़बर का अर्थ है.....
3. .....का अर्थ है.....
4. .....का अर्थ है.....
5. .....का अर्थ है.....
6. .....का अर्थ है.....

(ख) उचित जोड़े बनाओ :

1.	(i) اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ	ऐ हमारे रब, तेरे लिए ही तारीफ़ है।
2.	(ii) بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط	अल्लाह ने उसकी बात सुन ली, जि उसकी तारीफ़ की।
3.	(iii) سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ	शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से, जो रहमान और रहीम है।
4.	(iv) سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ	पाक है मेरा रब जो सबसे बड़ा है।
5.	(v) رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ	अल्लाह की पनाह माँगता हूँ मैं शै मरदूद से।
6.	(vi) سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى	पाक है मेरा रब, जो सबसे बरतर है।

(ग)

1. सना और उसका तर्जुमा सुनाओ।
2. तशह्हुद (अत्तहिय्यात) और उसका तर्जुमा सुनाओ।
3. दुरूद शरीफ़ और उसका तर्जुमा सुनाओ।

3

हमारी ईदें

हमारी ज़िन्दगी में यूँ तो ख़ुशी के बहुत-से मौक़े आते रहते हैं। कभी ादी-ब्याह, कभी दावत-मदारात। कभी अपने ही घर-घराने में, कभी मुहल्ले-ास या मिलने-जुलनेवालों के यहाँ। इन मौक़ों पर बहुत-से लोग मिल बैठते सब साफ़-सुथरे और अच्छे-अच्छे कपड़े पहनकर आते हैं, साथ खाते-पीते र मिल-जुलकर ख़ुशी मनाते हैं। लेकिन ख़ुशी के इन मौक़ों पर बस ती ही के कुछ लोग इकट्ठा होते हैं, कुछ रिश्ते-नाते के, कुछ मिलने-ानेवाले और दो-चार दूसरे, बाक़ी लोगों को इनसे कोई वास्ता नहीं होता।

अल्लाह तआ़ला ने साल में ख़ुशी के दो मौक़े ऐसे भी रखे हैं, जिनमें त ज़्यादा चहल-पहल होती है और सब मुसलमान मिल-जुलकर ख़ुशी ाते हैं, चाहे हिन्दुस्तान में रहते हों या दुनिया के किसी और मुल्क या के किसी कोने में बसते हों। ख़ुशी के ये दो मौक़े हमारी दो ईदें हैं :

① ईदुल-फ़ित्र, ② ईदुल-अज़हा (बक़्र-ईद)

ईदुल-फ़ित्र

यह हम मुसलमानों का बहुत ही मशहूर त्योहार है जो रमज़ान के रोज़े होने पर मनाया जाता है। हर घर में इसकी तैयारियाँ बहुत पहले से होने ती हैं। हमारी अम्मी हमारे लिए तरह-तरह के कपड़े सिलवाती हैं। -नए जूते और नई टोपियाँ मँगवाती हैं। आपा जान हमारे लिए रुमाल ार करती हैं। गोटा-किनारी टाँकती हैं। अगर किसी वजह से नए कपड़े न सके तो पुराने कपड़ों ही को अच्छी तरह धुलवाती हैं, उनकी मरम्मत

करती हैं। सारे घर की ख़ूब सफ़ाई होती है। ईद के दिन अच्छी-अच्छी उ
मीठी चीज़ें पकाने के लिए सामान मँगाया जाता है। ग़र्ज़ ईद के दि
तरह-तरह की तैयारियाँ होती हैं। ईद के दिन ज्यों-ज्यों क़रीब आते हैं, हम
ख़ुशी की इन्तिहा नहीं रहती। एक-एक दिन गिन-गिनकर काटते
आख़िरी रोज़े को ईद का चाँद बड़े ग़ौर से देखते हैं। चाँद की सूरत देख
ही हम फूले नहीं समाते। सबको सलाम करते हैं। हँस-हँसकर मुबारकब
देते हैं। मारे ख़ुशी के रात में देर तक नींद नहीं आती। अपना एक-ए
सामान उलट-पलटकर देखते हैं। किसी चीज़ की कमी हो तो उसे पूरी क
हैं। ग़र्ज़ ख़ूब चहल-पहल रहती है।

ईद के दिन सुबह-सवेरे ही उठ बैठते हैं। फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर गु
करते हैं, नए कपड़े पहनते हैं, ख़ुशबू लगाते हैं। फिर अब्बू, अम्मी, आ
भाई सबसे ईदी वसूल करते हैं। अब्बा मियाँ हिसाब करके घर के एक-ए
फ़र्द की तरफ़ से 'सद्क़-ए-फ़ित्र' निकालते हैं, कभी ग़ल्ले की शक्ल
कभी रुपये की शक्ल में। ईदगाह जाने से पहले यह सदक़ा मुहल्ले-पड़
के ग़रीबों में बाँट दिया जाता है, ताकि ईद के दिन कोई भूखा न रहने प
और ईद की ख़ुशी में अमीर-ग़रीब सब बराबर के शरीक हो जाएँ।

सुबह-सवेरे ही से अम्मी और आपा वग़ैरह खाना पकाने में जुट ज
हैं, मज़े-मज़े की चीज़ें तैयार करती हैं, सिवइयाँ, शीर ख़ुरमा, दही-
वग़ैरह। फिर सब लोग मज़े से खाते हैं। मुहल्ले-पड़ोस में तोहफ़ा देते
खा-पीकर, ख़ुश-ख़ुश ईदगाह की ओर रवाना होते हैं। हम सब छोटे-
साथ जाते हैं। रास्ते में आहिस्ता-आहिस्ता यह तकबीर पढ़ते जाते हैं

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

'अल्लाहु-अकबर, अल्लाहु-अकबर, ला-इला-ह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अक

ल्लाहु-अकबर व लिल्लाहिल हम्द।'

(अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह के अलावा ई इलाह नहीं। और अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है और ीफ़ व शुक्र अल्लाह ही के लिए है।)

हम लोग ईद की नमाज़ हमेशा ईदगाह में अदा करते हैं। थोड़ी देर ईदगाह नमाज़ियों से भर जाती है। वहाँ हर एक ख़ुश-व-ख़ुर्रम और अच्छे अच्छे लिबास में होता है। जिधर नज़र डालो, बड़ा अच्छा लगता है।

जब सब लोग इकट्ठा हो जाते हैं तो खड़े होकर सफ़ें सीधी करते हैं र इमाम साहब के पीछे जमाअ़त से दो रक्अ़त नमाज़ अदा करते हैं। की नमाज़ दूसरी नमाज़ों से कई बातों में अलग होती है। इस नमाज़ लिए न तो अज़ान कही जाती है और न इक़ामत (तकबीर)। पहली अ़त में 'सना' के बाद तीन बार और दूसरी रक्अ़त में रुकूअ़ में जाने पहले तीन बार तकबीर यानी कानों तक हाथ उठाकर 'अल्लाहु-अकबर', ादा कहते हैं। नमाज़ ख़त्म करने के बाद इमाम साहब मिम्बर पर चले ते हैं और ख़ुत्बा पढ़ते हैं। सब मुक़तदी ख़ामोशी से सुनते हैं। हमें याद कि दोनों ईदों में नमाज़ के बाद ख़ुत्बा पढ़ा जाता है। ख़ुत्बे के बाद क-दूसरे को ईद की मुबारकबाद देते हैं। ईदगाह के क़रीब ही ईद का मेला ाता है। तरह-तरह के खिलौने और मिठाइयाँ बिकती हैं। खेल-तमाशे होते हम लोग खिलौने और मिठाइयाँ ख़रीदते हैं। आख़िर में दूसरे रास्ते से ाी-ख़ुशी घर लौटते हैं।

ईदुल-अज़हा या बक़्र-ईद :

ईदुल-फ़ित्र तो शव्वाल की पहली तारीख़ को मनाई जाती है और ल-अज़हा इसके दो माह नौ दिन बाद 10वीं ज़िलहिज्जा को। यह हमारा

दूसरा बड़ा त्योहार है। ईदुल-अज़हा को ईदे-क़ुरबाँ और बक़्र-ईद भी क
हैं। ईदुल-फ़ित्र तो इस ख़ुशी में मनाई जाती है कि अल्लाह तआला
रमज़ान के जो रोज़े रखने का हुक्म दिया था, वे अच्छी तरह से पूरे हो ग

ईदुल-अज़हा उस वाक़िए की याद में मनाई जाती है जो हज़
इबराहीम (अलैहिस्सलाम) को पेश आया था। आपने ख़्वाब में देखा था
मैं अपने बेटे इसमाईल (अलैहि॰) को अल्लाह की राह में क़ुरबान कर
हूँ। जब अल्लाह के हुक्म से आप बेटे को क़ुरबान करने लगे तो अल्ल
ने रोक दिया और बेटे की जगह मेंढा क़ुरबान करने को कहा। स
मुसलमान भी इस वाक़िए की याद में क़ुरबानी करके मानो अपने इस इ
को दोहराते हैं कि ज़रूरत पड़ी तो हम भी अल्लाह की राह में अपना
कुछ क़ुरबान कर देंगे, चाहे वह अपनी या अपनी औलाद की जान ही व
न हो।

ईदुल-अज़हा में भी वही चहल-पहल और तैयारियाँ होती हैं
ईदुल-फ़ित्र में होती हैं, बल्कि इसकी चहल-पहल तो नवीं ज़िलहिज्जा
फ़ज्र की नमाज़ ही से शुरू हो जाती है। उसी वक़्त से हर फ़र्ज़ नमाज़
बाद सब नमाज़ी बुलन्द आवाज़ से एक साथ तकबीरे-तशरीक़ कहते

'अल्लाहु-अकबर, अल्लाहु-अकबर, ला-इला-ह इल्लल्लाहु, वल्लाहु-अक
अल्लाहु-अकबर, व लिल्लाहिल हम्द, कहते हैं और यह सिलसिला तेरह
ज़िलहिज्जा की अस्र तक चलता रहता है। क़ुरबानी भी ज़िलहिज्जा की
11 और 12, तीनों तारीख़ों में होती रहती हैं। दसवीं तारीख़ की सुबह
साफ़-सुथरे व अच्छे-अच्छे कपड़े पहनकर बिना खाए-पीए सब लोग ईदग
जाते हैं। ईदुल-फ़ित्र ही की तरह दो रक्अ़त नमाज़ अदा करते हैं। अलब
रास्ते में तकबीर आहिस्ता के बजाए बुलन्द आवाज़ से कहते हैं। ईदग
से वापसी के बाद क़ुरबानी होती है। क़ुरबानी भेड़-बकरी की भी हो सक

और दुम्बे-मेंढे की भी, गाय-बैल की भी हो सकती है और भैंस-ऊँट की । चूँकि कुछ वजहों से सरकार ने गाय-बैल वग़ैरह के ज़ब्ह करने पर अब बन्दी लगा दी है, इसलिए आजकल इनकी क़ुरबानी नहीं की जाती। भेड़-करी वग़ैरह छोटे जानवरों में एक ही हिस्सा होता है, जबकि बड़े जानवरों सात हिस्से होते हैं।

ज़ब्ह करने के बाद खाल को तो बेचकर उसकी रक़म ख़ैरात कर देते गोश्त के तीन हिस्से किए जाते हैं। एक हिस्सा ग़रीबों में बाँट दिया जाता एक हिस्सा रिश्तेदारों और दोस्तों को तोहफ़े में भेज दिया जाता है, बाक़ी श्त घर के लोग खाते हैं। ज़रूरत हो तो इन हिस्सो में कमी-बेशी भी कर जाती है। बक़्र-ईद ही के मौक़े पर मक्का में हज होता है। ये हैं हमारे बड़े त्योहार। अल्लाह तआ़ला इन दोनों की चहल-पहल बरक़रार रखे।

शब्दार्थ और टिप्पणी

ारात	=	आव-भगत
ा-किनारी टाँकना	=	सोने, चाँदी और रेशम के तारों से बनी हुई पतली पट्टी लगाना।

अभ्यास

) संक्षिप्त उत्तर दो :

1. वे त्योहार कौन-से हैं, जिनको दुनिया भर में सारे मुसलमान मनाते हैं?
2. सदक़-ए-फ़ित्र क्यों निकाला जाता है?
3. ईदुल-अज़हा किस वाक़िए की याद में मनाई जाती है?

4. क़ुरबानी करके हम किस इरादे को दोहराते हैं?
5. ईद की नमाज़ किन बातों में दूसरी नमाज़ों से मुख़्तलिफ़ होती है?
6. किन तारीख़ों में क़ुरबानी होती है?
7. क़ुरबानी का गोश्त किस तरह बाँटा जाता है?

(ख) उचित जोड़े लगाओ :

1.	ईदुल-फ़ित्र	एक हिस्सा
2.	ईदुल-अज़हा	सात हिस्से
3.	हज़रत इबराहीम (अलैहि॰)	शव्वाल की पहली तारीख़
4.	भेड़, बकरी	दसवीं ज़िलहिज्जा
5.	बड़े जानवर	हज़रत इसमाईल (अलैहि॰)

(ग) ज़बानी (मौखिक) :

1. अपनी ईद की तैयारियों का हाल सुनाओ।
2. तुमको कितनी ईदी मिली और तुमने उसे किस तरह ख़र्च किया?

कुछ और काम

1. ईद की नमाज़ पढ़कर दिखाओ।
2. तकबीर ज़बानी याद करो।

4

अदब और सलीक़े की बातें

दिन-रात में हम न जाने कहाँ-कहाँ जाते हैं और क्या-क्या काम करते । कभी हम मस्जिद जाते हैं, कभी मदरसे, कभी जलसों में जाते हैं और भी खेल के मैदान में। किसी के साथ खाते-पीते हैं, किसी के साथ ढ़ते-लिखते हैं, किसी के साथ हम उठते-बैठते हैं और खेलते-कूदते हैं। हमें न सब जगहों और कामों में दूसरों से वास्ता पड़ता है। हर जगह के कुछ ादाब और तौर-तरीक़े हैं इनका ख़याल रखने से सबको सुख मिलता है ोर उनके ख़िलाफ़ काम करने से दुःख। सलीक़ेमन्द बच्चे इन सब बातों ा पूरा ख़याल रखते हैं, इसलिए सब उनको पसन्द करते हैं। फूहड़ बच्चे नका ख़याल नहीं रखते, इसलिए सब उनसे नफ़रत करते हैं।

स्जिद के आदाब

मस्जिद अल्लाह का दरबार है। हम वहाँ के आदाब का बहुत ज़्यादा याल रखते हैं।

- मस्जिद में दाएँ पाँव से दाख़िल होते हैं और दाख़िल होते वक़्त यह दुआ पढ़ते हैं :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

'अल्लाहुम्मफ़्-तह ली अबवा-ब रहमतिक'।

- मस्जिद से निकलते समय पहले बायाँ पाँव बाहर निकालते हैं और

निकलते समय ये दुआ पढ़ते हैं :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُکَ مِنۡ فَضۡلِکَ

'अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलुक मिन्फ़ज़्लिक।'

❸ मस्जिद में शोर-गुल, हँसी-मज़ाक़ या इधर-उधर की बेकार बातें नह करते।

❹ वुज़ू करके एक तरफ़ अदब के साथ ख़ामोशी से बैठ जाते हैं औ अगर मौक़ा होता है तो बैठने से पहले दो रक्अ़त नमाज़ भी अदा क लेते हैं।

❺ मस्जिद को साफ़-सुथरा रखते हैं। वहाँ कूड़ा-करकट, गन्दगी आ नहीं होने देते।

❻ मिल जाए तो ख़ुशबू लगाकर जाते हैं, बदबूदार चीज़ें, जैसे कच्च लहसुन और कच्ची प्याज़ वग़ैरह, खाकर नहीं जाते। अगर खा लिर हो तो मुँह अच्छी तरह साफ़ कर लिया करते हैं।

क्लास के आदाब

❶ क्लास में सलाम करके जाते हैं और छुट्टी होने पर सलाम करके व वहाँ से निकलते हैं।

❷ फ़र्श पर बैठना हो तो जूते एक तरफ़ क़रीने से उतारते हैं।

❸ क्लास में बहुत ही ख़ामोशी से बैठते हैं और उस्ताद की बातें बहु ग़ौर से सुनते हैं।

❹ बोलने या सवाल करने में अपनी बारी का ख़याल रखते हैं। मुस्करा या हँसते हुए कोई सवाल नहीं करते।

- पेशाब-पाख़ाना या किसी और काम के लिए बाहर जाना हो तो उस्ताद से पूछकर जाते हैं। उस्ताद न हों तो मॉनीटर से पूछ लेते हैं।
- किसी दूसरे दर्जे में काम हो तो वहाँ इजाज़त लेकर दाख़िल होते हैं।
- क्लास को साफ़-सुथरा और सामान भी झाड़-पोंछकर क़रीने से रखते हैं।

खाने-पीने के आदाब

- खाने पर बैठने से पहले हाथ-मुँह अच्छी तरह धो लेते हैं।
- 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर एक तरफ़ से खाना शुरू करते हैं।
- एक ही बर्तन में एक ही साथ एक से ज़्यादा आदमी खा रहे हों तो अपने-अपने सामने से खाते हैं, न इधर-उधर हाथ बढ़ाते हैं और न अच्छा-अच्छा चुनकर खाते हैं।
- निवाले छोटे उठाते हैं। ख़ूब चबा-चबाकर निगलते हैं। खाना गिरने से बचाते हैं। खाने में मुँह से चप-चप की आवाज़ नहीं निकालते। बहुत गर्म खाना नहीं खाते और गर्म खाने को फूँक मारकर ठंडा नहीं करते।
- किसी खाने को बुरा नहीं कहते, मुँह बनाकर नहीं खाते, जो मिल जाए हँसी-ख़ुशी खा लेते हैं। अगर कोई चीज़ पसन्द न हो तो नहीं खाते, लेकिन उसमें ऐब नहीं निकालते।
- खड़े-खड़े, लेटकर या किसी चीज़ से टेक लगाकर नहीं खाते।
- पानी का बर्तन एक हाथ से पकड़ते हैं, दूसरे से सहारा देकर थोड़ा-थोड़ा तीन साँस में पीते हैं। हर बार बर्तन से मुँह हटाकर साँस लेते हैं और पानी पीकर 'अल्हम्दु लिल्लाह' कहते हैं।
- खा-पीकर हाथ-मुँह ख़ूब साफ़ करते हैं और अल्लाह का शुक्र अदा

करने के लिए यह दुआ पढ़ते हैं :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत्-अ-म-ना व सक़ाना व ज-अ-लना मिनल् मुसलिमीन

(सारी तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, जिसने हमें खिलाया और पिलाया और हमें मुसलमान बनाया।)

बातचीत के आदाब

❶ बोलने में न तो आवाज़ बहुत ऊँची रखते हैं, न बहुत पस्त; बस इतन कि आसानी से सुन ली जाए।

❷ किसी की बात नहीं काटते। दो आदमी बातें कर रहे हों तो बीच नहीं बोल पड़ते। अपनी बारी का इंतिज़ार करते हैं।

❸ कोई बात कर रहा हो तो बहुत ग़ौर से सुनते हैं, बेपरवाही न बरतते।

❹ बे ज़रूरत बहुत ज़्यादा या तेज़-तेज़ नहीं बोलते।

❺ सबसे बहुत ही तमीज़ से बातचीत करते हैं। बड़ों से ख़ासतौर प 'आप' और 'जी' कहकर बात करते हैं।

❻ बड़ों के सवाल का बहुत अदब से जवाब देते हैं। मुस्कराते, खुजला या नाक में उँगली डालते हुए जवाब नहीं देते।

❼ दो आदमियों की निजी बातचीत न तो कान लगाकर सुनते हैं औ न उनके पास जाकर खड़े होते हैं।

जलिस या इज्तिमा के आदाब

- मजलिस में जहाँ जगह मिल जाए बैठ जाते हैं, सफ़ें चीरकर आगे नहीं जाते।
- कच्चा लहसुन-प्याज़ खाकर या कोई बदबूदार चीज़ लेकर नहीं जाते। कपड़े साफ़-सुथरे पहनते हैं और मिल जाए तो ख़ुशबू भी लगा लेते हैं।
- अदब के साथ ख़ामोशी से बैठ जाते हैं, शोर-गुल या आपस में बातचीत नहीं करते।
- मजलिस में जो कुछ होता है, उसे ग़ौर से देखते और सुनते हैं।
- काना-फूसी नहीं करते और न किसी पर फबती या आवाज़े कसते हैं।
- आने-जाने का रास्ता छोड़कर बैठते हैं। लोग हल्क़ा (घेरा) बनाकर बैठे हों, तो बीच में नहीं घुसते।
- किसी को उठाकर उसकी जगह नहीं बैठते, न अपने आप किसी ऊँची जगह पर बैठने की कोशिश करते हैं।
- इधर-उधर न तो खड़े रहते हैं, न चलते-फिरते हैं और न सिर उठा-उठाकर देखते हैं, बल्कि किसी जगह सुकून से बैठ जाते हैं।

अदब और सलीक़े की इन सारी बातों का ख़याल रखने से सबको ाराम मिलता है और हम सब अच्छी नज़रों से देखे जाते हैं। इसी लिए लाम ने अदब और सलीक़े की बातों की बड़ी ताकीद की है।

शब्दार्थ और टिप्पणी

अदब	=	तौर-तरीक़े
फ़ब्ती कसना	=	मज़ाक़ उड़ाना
आवाज़े कसना	=	उपहास करना, छेड़ना, किसी को नामुनासिब अलफ़ा से पुकारना
निजी	=	व्यक्तिगत, ज़ाती
पस्त	=	धीमी, नीची

अभ्यास

(क) संक्षिप्त उत्तर दो :

1. किसी ज़रूरत या काम से क्लास से बाहर जाना हो तो किससे पूछव जाते हैं?
2. क्लास को साफ़-सुथरा रखने के लिए क्या-क्या करते हैं?
3. पानी पीने के क्या आदाब हैं?
4. बड़ों से किस तरह बात करनी चाहिए?
5. आप जब किसी मज़लिस में जाते हैं तो किस तरह बैठते हैं?
6. वे कौन-से काम हैं, जिन्हें खाना खाते वक़्त नहीं करना चाहिए?

(ख) नीचे कुछ अदब की और कुछ बेअदबी की बातें लिखी हैं। इनमें कु सलीक़ेमन्द बच्चों की पहचान हैं और कुछ फुहड़ बच्चों की। इन बातों क ग़ौर से पढ़ो और सामने बने हुए ख़ानों में 'सलीक़ामन्द' और 'फुहड़' में जो मुनासिब हो, लिखो :

1. मस्जिद में शोर-गुल, हँसी-मज़ाक़ या दुनिया की बातें नहीं करते। ( )

2. फ़र्श पर बैठना हो तो जूते एक तरफ़ क़रीने से उतारते हैं। ( )

3. बोलने या सवाल करने में अपनी बारी का ख़याल नहीं रखते हैं। ( )

4. 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर एक तरफ़ से खाना शुरू करते हैं। ( )

5. दो आदमी बातें कर रहे हों तो बीच में बोल नहीं पड़ते। ( )

6. मजलिस में जहाँ जगह मिल जाए वहाँ बैठते नहीं बल्कि सफ़ें चीरकर आगे जाते हैं। ( )

I) नीचे विभिन्न अवसरों के आदाब लिखे हुए हैं, उनको पढ़कर उचित जोड़े बनाओ :

(अ)	(ब)
1. मस्जिद के आदाब	मुस्कराते, खुजलाते या नाक में उँगली डालते हुए जवाब नहीं देते।
2. खाने के आदाब	आने-जाने का रास्ता छोड़कर बैठते हैं।
3. बातचीत के आदाब	मुँह से चप-चप की आवाज़ें नहीं निकालते।
4. मजलिस के आदाब	मौक़ा होता है तो बैठने से पहले दो रक्अ़त सुन्नत भी पढ़ लेते हैं।

(घ) ख़ाली जगहों को भरो :

1. हर जगह के कुछ आदाब होते हैं, उनका ख़याल रखने से सब .....मिलता है।
2. मस्जिद में दुआ पढ़ते हुए.....पाँव से दाख़िल होते
3. मस्जिद में बदबूदार चीज़.....वग़ैरह खाकर नहीं जाते
4. किसी दूसरे दर्जे में काम हो तो.....लेकर दाख़िल होते है
5. मजलिस में आपस में.....नहीं करते।
6. खाने पर बैठने से पहले.....अच्छी तरह धो लेते हैं।

कुछ और काम

1. इस सबक़ में जो दुआएँ सिखाई गई हैं, उनको ज़बानी याद कर लो और अ उस्ताद से उनका अर्थ भी मालूम करो।
2. तुमने जो अदब-सलीक़े की बातें पढ़ीं, उन्हें साफ़ और सुन्दर अक्षरों लिखकर अपने पढ़ने और सोने के कमरे में लगाओ और उन्हें बार-बार प और उनपर अमल करो।

दूसरों का हमपर हक़

अल्लाह का शुक्र है, अब मैं दस साल का हो गया, लेकिन इतना बड़ा अपने आप नहीं हो गया। मुझे यहाँ तक पहुँचाने में न जाने किस-किस हाथ है। जब मैं उन सारी भलाइयों को सोचता हूँ जो इस मुद्दत में दूसरों मेरे साथ की हैं तो उन सबकी क़द्र मेरे दिल में बहुत बढ़ जाती है। उनके ए प्यार-मुहब्बत का जज़्बा उभरता है। बहुतों के लिए दिल से दुआएँ कलती हैं।

किसी ने हमें पैदा किया है। किसी ने सीधी राह दिखाई है। किसी ने ब्बत से पाला-पोसा है। किसी ने अपनी गाढ़ी कमाई हम पर ख़र्च की किसी के साथ हम खेले-कूदे हैं और किसी ने जी बहलाया है। ग़र्ज़ तों ने तरह-तरह से हमपर एहसान किया है। इन सबका हमपर हक़ है। नाशुकरे नहीं हैं कि किसी का एहसान भूल जाएँ।

ल्लाह तआला का हक़

सबसे ज़्यादा हक़ हमपर अल्लाह तआला का है। अल्लाह तआला ने को पैदा किया है, हमारा नाक-नक़्शा सँवारा है। ज़रूरत का सारा सामान ा है। जानवर या कुछ और नहीं, बल्कि इनसान बनाकर मख़लूक़ में से ऊँचा दर्जा दिया है। ज़मीन पर अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया है। इल्म शा है, अक़्ल दी है। मुसलमान के घराने में पैदा करके सच्चे दीन पर ने की राह हमपर आसान कर दी है। कहाँ तक गिनाएँ सिर से पैर तक

हम उसके एहसान तले दबे हैं।

अल्लाह का हमपर हक़ है कि :

① हम सिर्फ़ उसी को अपना माबूद, मालिक, ख़ालिक़ और राज़ि और हाकिम मानें। उसके किसी काम या किसी इख़्तियार में, उसकी वि बात या किसी ख़ूबी में दूसरों को उसका साझी न ठहराएँ।

② उसकी नेमतों का शुक्रिया अदा करने के लिए दिल लगाकर उस इबादत करें। पाबन्दी से नमाज़ पढ़ें। उसी को अपना माबूद मानें। उसी सामने सिर झुकाएँ। उसके सिवा किसी और को बन्दगी के लायक़ समझें। किसी और की इबादत न करें।

③ सबसे ज़्यादा उसको चाहें। वे सारे काम करें, जिनसे वह ख़ुश ह है। उन कामों से बचें, जिनसे वह नाराज़ होता है। भूल-चूक हो जाए तो से गिड़गिड़ाकर माफ़ी माँगें और हमेशा के लिए तौबा कर लें।

④ दोस्ती, दुश्मनी, सुलूक और एहसान किसी के साथ जो कुछ अल्लाह के वास्ते करें, किसी और ग़र्ज़ से न करें।

प्यारे नबी (सल्ल॰) का हक़

अल्लाह तआला के बाद सबसे ज़्यादा हक़ हमपर प्यारे नबी (सल्ल का है। अल्लाह ने आप (सल्ल॰) पर क़ुरआन उतारा। आपने अल्लाह मर्ज़ी बताई, अल्लाह के हुक्मों पर चलकर दिखाया। हमें इस्लाम की दौ से माला-माल किया। ज़िन्दगी गुज़ारने का सीधा-सच्चा रास्ता दिखा हमारे भले के लिए तरह-तरह के दुख झेले। आपकी वजह से हमारे हाल सुधार हुआ। आपने इधर-उधर भटकते फिरने से बचाया, दूसरों को सत और ज़ुल्म करने से रोका। आपने दुनिया में अम्न व इत्मीनान से र

ब्राया और आख़िरत के सख़्त अज़ाब से बचने का तरीक़ा भी बताया।

आप ही की तालीम ने हमें गुमराही से बचा लिया। आपका हम ना भी एहसान मानें, कम है।

प्यारे नबी (सल्ल॰) का हमपर हक़ है कि हम :

दिल से आपकी इज़्ज़त करें। आपपर दुरूद व सलाम भेजें :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِ نَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا

وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ ○

अल्लाहुम-म सल्लि अ़ला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव व अ़ला आलि सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव व बारिक व सल्लिम।

आपका कहा मानें, आपकी पैरवी करें और आप ही का नमूना हमेशा अपने सामने रखें।

अपने आपसे और अपने माँ-बाप से भी ज़्यादा आपको चाहें।

आपके सहाबा (रज़ि॰) से मुहब्बत करें।

-बाप का हक़

अल्लाह और रसूल के बाद हमपर सबसे ज़्यादा हक़ माँ-बाप का है। ोंने हमको पैदा किया। हमारी अम्मी ने हमें नौ महीने अपने पेट में रखा। ा दुःख झेलकर जना। हम मजबूर और बेबस थे, हमारी अम्मी ने मुहब्बत इमें पाला-पोसा। हमारी ख़ातिर रात की नींद और दिन का चैन तज ा। हमें कुछ नहीं आता था, उन्होंने प्यार से एक-एक बात सिखाई। नों हमें लादे-लादे फिरीं, अपना दूध पिलाकर बड़ा किया। हमारी मामूली-बीमारी में बेचैन हो-हो गईं। उन जैसा प्यार तो हमने कहीं नहीं देखा।

अब्बा मियाँ का भी हमपर कम एहसान नहीं है। हमारे पालने-पो में वे बराबर के शरीक रहे। अपनी गाढ़ी कमाई हमपर ख़र्च की। हमें अ से अच्छा खिलाया, अच्छे से अच्छा पहनाया, हमारे लिए मेवे-मिठाई ख खिलौने लाए। हमारी भलाई-बेहतरी की हमेशा तदबीरें कीं। हमें प मुहब्बत से पढ़ाया-लिखाया और हमेशा इस फ़िक्र में रहे कि हम दीन-दुनि में बड़ी से बड़ी कामयाबी हासिल करें। ये हमारे अब्बा मियाँ ही हैं जो अपने से भी बढ़कर देखना चाहते हैं।

माँ-बाप का हमपर हक़ यह है कि हम :

❶ दिल से उनकी इज़्ज़त करें। उनसे मुहब्बत करें। उनसे अदब के स पेश आएँ। कभी कोई ऐसी बात या ऐसा काम न करें, जिससे उन दुःख हो।

❷ हँसी-ख़ुशी उनका कहा मानें, हर तरह से उनकी ख़िदमत करें।

❸ उनके लिए अल्लाह तआ़ला से रहमत की यह दुआ करते रहें :

رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِي صَغِيرًا

रब्बिर्हमहुमा कमा रब्बयानी सग़ीरा।

उस्ताद का हक़

हमारे उस्ताद हमारे रूहानी बाप हैं और उस्तानी हमारी रूहानी म हम अनपढ़ थे, उन्होंने मेहनत से हमें लिखना-पढ़ना सिखाया। अल्लाह क रसूल की बातें बताईं। हमारी बेहतर तरबियत की। उन्होंने इतनी मेहनत की होती, तो हम जाहिल रह जाते। दीन की बातों और दुनिया के अ कामों की हमें ख़बर न होती।

हमपर उस्तादों का हक़ यह है कि हम :

दिल से उनकी इज़्ज़त करें, अदब से उनका नाम लें और उनसे मुहब्बत से पेश आएँ।

हँसी-ख़ुशी उनका कहा मानें, कोई भी काम उनके सिखाने या बताने के ख़िलाफ़ न करें।

हर तरह से उनकी ख़िदमत करें।

इन-भाइयों का हक़

बहन-भाइयों का भी हमपर बहुत हक़ है। उनके साथ हम एक ही घर में पले-बढ़े हैं। एक ही साथ खाया-खेला है। प्यार-मुहब्बत की बातें की हैं। भाई-बहनों ने हमें गोद में खिलाया है। खाने-पीने की चीज़ों में हमें साझा दिया है। खेल-कूद में शरीक किया है। मार-पीट से बचाया है। प्यार-मुहब्बत से समझाया है। छोटे भाई-बहनों की प्यारी-प्यारी सूरतों और भोली-भाली बातों से हमने अपना जी बहलाया है। उनकी बचकाना हरकतों से हमने लुत्फ़ लिया है। इन सबके लिए हमारे दिल में बड़ी जगह है। बड़े भाई का दर्जा तो बाप जैसा है और बड़ी बहन का माँ जैसा। इसलिए इन दोनों का तो हमपर बड़ी हद तक वही हक़ है, जो हमारे माँ-बाप का है।

छोटे भाई-बहनों का हमपर हक़ यह है कि हम :

उनसे प्यार-मुहब्बत से पेश आएँ।

उनकी भूल-चूक को माफ़ कर दिया करें। उनकी नादानी से अगर नुक़सान हो जाए तो भी मारने-पीटने के बजाए मुहब्बत से उन्हें समझा दिया करें।

खाने-पीने की चीज़ों में उनको शरीक कर लिया करें।

शब्दार्थ और टिप्पणी

नमूना = नज़ीर, मिसाल
मुद्दत = अवधि, वक़्त
क़द्र = इज़्ज़त, आदर, एहतिराम
तदबीर = फ़िक्र, कोशिश
मख़लूक़ = सृष्ट जीव, प्राणी, पैदा की हुई
ख़ालिक़ = बनानेवाला, पैदा करनेवाला
राज़िक़ = रोज़ी देनेवाला, आजीविका प्रदान करनेवाला
तसलीम = स्वीकार, क़बूल
माबूद = उपास्य, इलाह
आख़िरत = परलोक, मरने के बाद की ज़िन्दगी
अज़ाब = यातना
तालीम = शिक्षा
तज देना = छोड़ देना
गाढ़ी कमाई = मेहनत से हासिल किया हुआ माल
लुत्फ़ = मज़ा

अभ्यास

(क) उत्तर दो :

1. अल्लाह तआ़ला के हमपर क्या-क्या एहसानात हैं?
2. हमें अल्लाह तआ़ला की नेमतों का शुक्र किस तरह अदा क चाहिए?

3. हमपर अल्लाह तआ़ला के बाद सबसे ज़्यादा नबी (सल्ल॰) का हक़ क्यों है?

4. माँ-बाप के हमपर क्या-क्या हक़ हैं?

5. उस्ताद का दर्जा हमारे बाप जैसा और उस्तानी का दर्जा माँ जैसा क्यों है?

6. तुम छोटे भाई-बहनों से किस तरह पेश आते हो?

ग) हमपर दूसरों के कुछ हक़ हैं। नीचे के वाक्यों को ग़ौर से पढ़ो और उनके सामने बने ख़ानों में लिखो कि यह किसका हक़ है :

1. सबसे ज़्यादा उसको चाहें, वे सारे काम करें, जिनसे वह ख़ुश होता है ( )
2. हँसी-ख़ुशी उनका कहना मानें, हर तरह से उनकी ख़िदमत करें। ( )
3. आपका कहा मानें, आपकी पैरवी करें, आप ही का नमूना हमेशा सामने रखें। ( )
4. हँसी-ख़ुशी उनका कहा मानें, कोई काम उनके सिखाने या बताने के ख़िलाफ़ न करें। ( )
5. खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने और खेलने-कूदने की चीज़ों में उनको शरीक कर लिया करें। ( )

घ) ख़ाली जगहों को भरें :

1. अल्लाह ने हमको पैदा किया है। हमारा नाक-नक़्शा.....है।
2. इनसान बनाकर.....में सबसे ऊँचा दर्जा दिया है।
3. ज़मीन पर अपना.....मुक़र्रर किया है।
4. मुसलमान के घर पैदा करके.....की राह हमपर आसान कर दी है।

5. .....का हमपर हक़ है कि माँ-बाप से भी ज़्यादा आपको चा

6. हम मजबूर और बेबस थे। मुहब्बत से हमें.....

7. हमारे उस्ताद हमारे.....बाप हैं।

8. बड़े भाई का दर्जा तो..... है और बड़ी बहन का.. .....जैसा।

कुछ और काम

माँ-बाप के सिलसिले में जो दुआ इस पाठ में सिखाई गई है, उसे ज़बानी य क़र लो। उसका तर्जुमा यह है :

"ऐ हमारे रब, इन दोनों पर रहम फ़रमा, जिस तरह इन दोनों ने हमारे बच में हमें पाला-पोसा।"

अपने माँ-बाप के हक़ में हमेशा यह दुआ करते रहो।

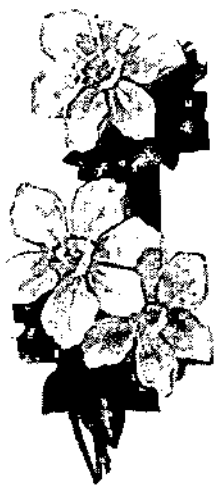

माँ-बाप

स प्यार से सवेरे, माँ ने मुझे जगाया।
ा तो मुँह धुलाकर, कुछ नाश्ता कराया।।
र करके जब मैं रूठा, तो प्यार से मनाया।
ने से भी लगाया, और गोद में बिठाया।।

शोख़ी न अब करूँगा, ज़िद्दी न अब बनूँगा।
मैं जानो-दिल से ख़िदमत, माँ-बाप की करूँगा।।

दिन हैं याद मुझको, बीमार जब मैं होता।
ा न चैन दिन को, रातों को भी न सोता।।
दर्द और दुःख से, बेचैन हो के रोता।
बा का सुख गँवाता, अम्मा की नींद खोता।।

जो मुझसे हो सकेगा, आराम इनको दूँगा।
मैं जानो-दिल से ख़िदमत, माँ-बाप की करूँगा।।

का रहे हमेशा, सिर पर हमारे साया।
ता हूँ आजिज़ी से, सुन ले मेरे ख़ुदाया!
याद है वो मुझको, जो कुछ कि उनसे पाया।
हाथ इनके आया, मेरे लिए लुटाया।।

मैं भी कमा के दौलत, सारी इन्हीं को दूँ
मैं जानो-दिल से ख़िदमत, माँ-बाप की करूँग

किन मेहनतों से अब्बा, घर में कमा के लाए।
बाहर गए सवेरे, और शाम को घर आए।।
इनके सबब से मैंने, सुख सैकड़ों उठाए।
रखूँगा याद हरदम, जो-जो मज़े उड़ाए।।

जो कुछ बनेगा मुझसे, वो सब मैं इनको दूँ
मैं जानो-दिल से ख़िदमत, माँ-बाप की करूँग

● **अली अहमद**, नया

प्यारे बनी (सल्ल॰) कैसे थे?

सारी दुनिया के सरदार, हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ल्ल॰) सबसे अच्छे थे। आपकी सारी बातें अच्छी थीं, आपके सारे काम े थे। दीन-दुनिया की सारी भलाइयाँ आपके अन्दर थीं। हम आपके कहाँ तक गाएँ। आपकी तारीफ़ तो ख़ुद अल्लाह तआ़ला ने की है।

किसी ने आपकी प्यारी बीवी हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि॰) से ; "आप कैसे थे?"

वे बोलीं, "आप क़ुरआन का सच्चा नमूना थे।" यानी क़ुरआन में ानी अच्छाइयाँ बयान हुई हैं वे सब आपमें मौजूद थीं।

प्यारे नबी (सल्ल॰) बहुत पाक-साफ़ रहते। गंदगी से आपको सख़्त रत थी। आपने पाकीज़गी को आधा ईमान बताया है। साफ़ कपड़े ाते, रोज़ मिसवाक करते, इत्र और सुर्मा लगाते, बालों में कंघा करते।

खाना शौक़ से खाते, खाने को बुरा न कहते। सामने से खाना शुरू ो, इधर-उधर हाथ न डालते, भूख से ज़्यादा न खाते, खाते ही सो न ; भरे पेट पर कुछ न खाते, ऐसा करने से मना भी फ़रमाते।

अपना काम आप ख़ुद कर लेते, दूसरों का भी काम कर देते, जानवरों चारा-पानी देते और उनका दूध दूहते।

कपड़े धो लेते, आटा गूँध देते, बाज़ार से सौदा उठा ले आते, जूते गाँठ मकान की मरम्मत कर लेते, कभी बेकार न बैठते, काम-काज में लगे और दूसरों से काम लेना पसन्द न करते।

आप बहुत ही सादा रहते, सादा कपड़े पहनते। मामूली बिस्तर पर

सोते। मर्दों को सोना और रेशम पहनने से मना करते और घरों को ब
ज़्यादा सजाना नापसन्द फ़रमाते।

आप अपने बुज़ुर्गों की बड़ी इज़्ज़त करते। एक बार आपकी
अम्माँ हज़रत हलीमा सादिया (रज़ि॰) आईं तो आपने उनके बैठने के
अपनी चादर बिछा दी और उनकी बड़ी ख़ातिर की। एक बार आपके
अब्बा आ गए, आपने उनके लिए चादर का एक हिस्सा बिछा दिया,
दूध अम्माँ आ गईं तो आपने दूसरा हिस्सा बिछा दिया, आख़िर में दूध
आ गए, तो आप उठ खड़े हुए और उन्हें अपने सामने बिठाया।

बच्चों से तो आपको बेहद मुहब्बत थी। बच्चे भी आपसे ब
मुहब्बत करते थे। गली-कूचों में आपको देखकर उछलने-कूदने लग
आ-आकर आपसे मिलते, आप सबको सलाम करते, गोद में उठाते,
करते और दुआएँ देते। आपने कभी भी किसी बच्चे को नहीं पीटा। ब
को मारने- पीटने से मना फ़रमाते थे।

ऐसे प्यारे नबी (सल्ल॰) को कौन अपने माँ-बाप से बढ़कर
समझेगा। हम भी आपको सारी दुनिया से ज़्यादा प्यारा समझते हैं। आ
कोई बात सुनते हैं तो फ़ौरन मान लेते हैं और नाम आता है तो दुरूदो-स
भेजते हैं :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

अल्लाहुम-म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव व अ़ला
आलि मुहम्मदिंव व बारिक व सल्लिम।

शब्दार्थ और टिप्पणी

गुणगान = ख़ूबियाँ बयान करना

जूते गाँठना = जूतों की मरम्मत करना, जूतों के फटे हुए हिस्सों को सीना

अभ्यास

) उत्तर दो :

1. "हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) कैसे थे?" इसके उत्तर में आप (सल्ल॰) की बीवी हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि॰) ने क्या कहा?
2. साफ़-सुथरा रहने के लिए आप (सल्ल॰) क्या करते थे?
3. खाने के सिलसिले में आप (सल्ल॰) का क्या तरीक़ा था?
4. आप (सल्ल॰) बुज़ुर्गों से कैसे पेश आते थे?
5. अपने कौन-कौन से काम प्यारे नबी (सल्ल॰) ख़ुद करते थे?
6. प्यारे नबी (सल्ल॰) बच्चों से कैसा सुलूक करते थे?
7. तुम इस दुनिया में किसको सबसे प्यारा समझते हो?

) ख़ाली जगहों को भरो :

1. .....से आप (सल्ल॰) को सख़्त नफ़रत थी।
2. .....को आप (सल्ल॰) ने आधा ईमान बताया है।
3. दूसरों से.....लेना पसन्द न करते।
4. आप (सल्ल॰) बहुत ही.....रहते थे।
5. बच्चों को मारने-पीटने से आप (सल्ल॰).....करते थे।

कुछ और काम

प्यारे नबी (सल्ल॰) को कौन-से काम नापसन्द थे? बताओ।

18

प्यारे नबी (सल्ल॰) की प्यारी बातें

प्यारे नबी (सल्ल॰) की प्यारी-प्यारी बातें मुझे बहुत अच्छी लगती है मैं उन्हें बहुत ग़ौर से सुनता और पढ़ता हूँ। उन्हें याद रखने और उन चलने की पूरी कोशिश करता हूँ। आप (सल्ल॰) की कुछ बातें आप सुनिए :

1. बच्चे जन्नत के फूल हैं।
2. जिस घर में बच्चे नहीं, बरकत नहीं।
3. हर मुसलमान (मर्द-औरत) पर इल्म हासिल करना फ़र्ज़ है।
4. गोद से गोर (क़ब्र) तक इल्म हासिल करते रहो।
5. जिससे इल्म सीखो उसकी इज़्ज़त करो।
6. जाहिल से बढ़कर कोई मोहताज नहीं, इल्म से बढ़कर कोई दौलत नहीं
7. बड़ों का अदब, छोटों से प्यार, जो ऐसा न करे वह हममें से नहीं।
8. जन्नत माँ के क़दमों तले है।
9. अल्लाह की ख़ुशी बाप की ख़ुशी में है, अल्लाह की नाराज़ी बाप की नाराज़ी में है।
10. माँ-बाप को गाली देना या बुरा कहना बहुत बड़ा गुनाह है और यह गाली देना है कि कोई दूसरे के माँ-बाप को गाली दे या बुरा कहे और जवाब में वह उसके माँ-बाप को गाली दे या बुरा कहे।
11. बड़े भाई का रुत्बा बाप जैसा है।

. खाना 'बिस्मिल्लाह' कहकर शुरू करो, शुरू में भूल जाओ तो आख़िर में कहो।
. बाज़ार में खाना बड़ी नालायक़ी है।
. मरीज़ के सामने बैठकर मत खाओ।
. जो अपने लिए पसन्द करो, वही दूसरों के लिए भी पसन्द करो।
. बुरे साथी से अकेला रहना बेहतर है।
. सलाम किया करो। इससे मुहब्बत बढ़ेगी।
. छोटा-बड़े को, चलनेवाला बैठे हुए को, छोटी टोली बड़ी टोली को सलाम करे।
. देकर वापस लेनेवाला उस कुत्ते जैसा है, जो क़ै करके चाटता है।
. झूठ से आदमी का मुँह काला होता है।
. सच बोलो चाहे अपना नुक़सान ही हो जाए।
. किसी की मुसीबत पर न हँसो, ऐसा न हो कि तुम ख़ुद फँस जाओ।
. अंधे को ग़लत रास्ता बता देनेवाले पर लानत है।
. चुग़लख़ोर जन्नत में न जाएगा।
. जो किसी चिड़िया को खेल के तौर पर मारेगा, क़ियामत में वह चिड़िया उसके ख़िलाफ़ फ़रियाद करेगी।
. नमाज़ ठीक वक़्त पर अदा करो।
. नमाज़ में अपनी सफ़ों को सीधा करो।
. नमाज़ में कनखियों से देखना तबाही है।
. रुकूअ़ या सज्दे में इमाम से पहले सिर उठानेवाले का सिर अल्लाह तआ़ला कहीं गधे के सिर से तब्दील न कर दे।

30. कहो कि 'मैं ईमान लाया' और फिर उसी पर जमे रहो।

31. अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "मैं आख़िर नबी हूँ, मेरे बाद कोई नबी पैदा न होगा।"

प्यारे नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "मेरे रब ने मुझे नौ बातों का हुक्म दिया है :

1. खुले-छिपे हर हाल में अल्लाह से डरता रहूँ।
2. किसी से ख़ुश हूँ या नाख़ुश, हर हाल में इनसाफ़ की बात कहूँ।
3. नादारी हो या ख़ुशहाली, किसी हाल में हद से न बढ़ूँ।
4. जो मुझसे कटे, मैं उससे जुड़ूँ।
5. जो मुझे न दे, मैं उसे दूँ।
6. जो मुझपर ज़ुल्म करे, मैं उसे माफ़ कर दूँ।
7. चुप बैठूँ तो कुछ सोच-विचार किया करूँ।
8. बात करूँ तो अल्लाह की बात करूँ।
9. कुछ देखूँ तो उससे नसीहत हासिल करूँ और (आम तौर पर) भले का हुक्म दूँ।"

ज़ाहिर है इन बातों को हम तक पहुँचाने का मतलब ही यह है कि अल्लाह तआ़ला ने हमें भी इन बातों का हुक्म दिया है।

शब्दार्थ और टिप्पणी

ाहिल = अनपढ़, गँवार

ग़लख़ोर = किसी की ऐसी बात को दूसरों तक पहुँचानेवाला जिसकी वजह से वह शख़्स उससे नाराज़ हो जाए और उनमें झगड़ा जो जाए।

ादारी = ग़रीबी, मुहताजी

अभ्यास

क) उत्तर दो :

1. प्यारे नबी (सल्ल॰) की प्यारी बातें क्यों सुनाई जाती हैं?
2. किसी के माँ-बाप को गाली देना क्यों अपने माँ-बाप को गाली देने के बराबर है?
3. सलाम का फ़ायदा और उसके आदाब क्या हैं?
4. चिड़िया को खेल के तौर पर मारने से आप (सल्ल॰) ने क्यों मना किया है?
5. किसी की मुसीबत पर हँसने से क्यों मना किया गया है?

ब) नीचे दिए हुए शब्दों को वाक्यों में इस तरह इस्तेमाल करो कि उनमें प्यारे नबी (सल्ल॰) की प्यारी बातें आ जाएँ।

जैसे : बाज़ार में खाना बड़ी **नालायक़ी** है।

नालायक़ी, सच, झूठ, चुग़लख़ोर, पसन्द

(ग) नीचे लिखे हुए वाक्यों को ग़ौर से पढ़ो और सही या ग़लत बताने के लि कोष्ठकों में सही (√) या ग़लत (×) का निशान लगाओ :

1. जन्नत माँ के क़दमों तले है। ( )
2. बच्चे घर के फूल हैं। ( )
3. अन्धे को ग़लत रास्ता बतानेवाले पर लानत है। ( )
4. नमाज़ में अपनी सफ़ों को सीधा करो। ( )
5. जो मुझसे कटे, मैं उससे कटूँ। ( )

(घ) ख़ाली जगहों को भरो :

1. गोद से.....तक इल्म हासिल करो।
2. जिससे.....सीखो उसकी इज़्ज़त करो।
3. .....के सामने बैठकर मत खाओ।
4. जो मुझ पर.....करे, मैं उसे माफ़ कर दूँ।
5. कुछ देखूँ तो उससे.....हासिल करूँ।

कुछ और काम

प्यारे नबी (सल्ल॰) की ये प्यारी बातें (हदीसें) ज़बानी याद करो और सुनाओ इन्हें ख़ुद भी अपनाओ और दूसरों तक भी पहुँचाओ।

19

अल्लाह की राह में सताया जाना

इस्लाम ही सच्चा दीन है। इसी को अपनाने में सबकी नजात है। ोन-दुनिया की सारी भलाइयाँ इस्लाम ही पर चलकर हासिल हो सकती हैं। ो लोग इस्लाम से हट जाते हैं वे ख़ुद भी बहकते हैं और दूसरों को भी हकाते फिरते हैं। अपने आपको भी बिगाड़ते हैं और हर तरफ़ फ़ितना और फ़साद फैलाकर सबको दुख देते हैं। दुनिया की ज़िन्दगी तो यूँ तबाह ोती है और आख़िरत में ऐसे लोगों के लिए बहुत ही दर्दनाक अज़ाब है।

लोगों को तबाही-बरबादी और आख़िरत के दर्दनाक अज़ाब से बचाने के लिए प्यारे नबी (सल्ल॰) दुनिया में तशरीफ़ लाए थे। आपने लोगों को इस्लाम की सीधी-सच्ची राह दिखाई। भले लोग मान गए, आपके साथ हो गए। बुरे लोग अपनी बुराइयाँ छोड़ने के लिए तैयार न हुए। आप (सल्ल॰) उनका भला चाहते थे, वे उल्टा आपके दुश्मन बन गए। पहले आपको डराया-धमकाया, फिर लालच दिया। नाकाम रहे तो तरह-तरह से सताने लगे। आपको रास्ता चलते छेड़ते, गालियाँ देते, पत्थर मारते, रास्ते में काँटे बिछाते, आप (सल्ल॰) पर कूड़ा-करकट डालते, गन्दगी और ग़लाज़त फेंकते। आप (सल्ल॰) ये सारे दुख सहते और सब्र करते। उनकी भलाई के लिए बराबर कोशिश करते और उनकी हिदायत के लिए अल्लाह से दुआ करते। मगर उन ज़ालिमों का जुल्म बढ़ता ही गया। आपके पूरे ख़ानदान को बिरादरी से बाहर करके उनपर खाना-पानी बन्द कर दिया गया। बच्चे भूख से बिलकने लगे, फ़ाक़े पर फ़ाक़े होने लगे और पत्तियाँ चबाकर उन्हें दिन काटने पड़े।

कुछ दिन बाद प्यारे नबी के हमदर्द चचा अबू-तालिब चल बसे। आ (सल्ल॰) की प्यारी बीवी हज़रत ख़दीजा (रज़ि॰) भी चल बसीं। इन दोनों आपको बड़ी ढारस थी। काफ़िर इन दोनों से डरते थे और इनका लिहा करते थे। इनके मरने पर वे जी भरकर सताने लगे।

एक बार आप (सल्ल॰) काबा में नमाज़ पढ़ रहे थे। एक शरारती देखा, अपनी चादर लपेटकर फन्दा बनाया और आप (सल्ल॰) के गले डाल दिया। आप (सल्ल॰) सजदे में गए तो बड़ी बेदर्दी से वह खींचने लगा इतने में आपके सच्चे साथी हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) आ गए। काफ़िरों व टोका तो इन बदमाशों ने हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) को भी मारा-पीटा।

काफ़िरों का एक सरदार अबू-जहल था। वह भी आपका जानी दुश्म था। आप नमाज़ में थे कि उस ज़ालिम ने आपपर ऊँट की ओझ डलवा दी आपकी प्यारी बेटी बीबी फ़ातिमा ने सुना, दौड़ी हुई आईं और ओझड़ी व दूर फेंका, गन्दगी साफ़ की और उन ज़ालिमों को बहुत समझाया।

मक्का से कुछ दूर एक शहर ताइफ़ है। इस्लाम की बातें बताने अ ताइफ़ गए। ताइफ़वाले भी बहुत बुरे थे। उन्होंने दीने-इस्लाम को अपना भी नहीं, उल्टा आपको बहुत दुख दिया। पत्थर मारे, गालियाँ दीं, सताने लिए आपके पीछे नादान बच्चे लगा दिए। आप लहू-लुहान हो गए। म सब्र किया, बद्दुआ देने के बजाए उनकी हिदायत के लिए दुआ कर रहे।

आपके प्यारे साथी भी बहुत ही नेक और इस्लाम के पूरे पाबन्द थे वे भी लोगों को तबाही से बचाने के लिए इस्लाम की बातें बताते औ उसपर चलने के लिए कहते थे। ज़ालिम इन्हें भी बेहद सताते थे। आप एक अच्छे साथी हज़रत बिलाल (रज़ि॰) थे। वे एक काफ़िर के ग़ुलाम थे

ब उस ज़ालिम ने सुना कि बिलाल (रज़ि॰) मुसलमान हो गए हैं तो उसने हें सताना शुरू कर दिया। कई-कई दिन भूखा रखता, मारता-पीटता, ि रेत पर लिटाता, छाती पर गर्म पत्थर रखता, गले में रस्सी बाँधकर ारती लड़कों को दे देता, वे उन्हें पत्थरों में घसीटते फिरते। हज़रत बिलाल ज़ि॰) अल्लाह की राह में दुख उठाते और सब्र करते रहे। अल्लाह उनसे ाी हो।

आपके एक साथी हज़रत ख़ब्बाब (रज़ि॰) थे। जब वे मुसलमान हुए तो फ़िरों ने उनको भी बहुत सताया। एक दिन ज़ालिमों ने कोयले जलाकर ीन पर बिछा दिए, उसपर उन्हें चित लिटा दिया। फिर छाती पर पाँव रखे ताकि करवट न ले सकें। उनकी सारी पीठ जल गई।

हज़रत यासिर (रज़ि॰) आपके एक और प्यारे साथी थे। अबू-जहल ने उनके सारे ख़ानदान को बुरी तरह सताया। बाल-बच्चों को बड़े दुख ए। उनकी नेक बीवी को तो ज़ालिमों ने बरछी मारकर शहीद कर दिया।

हमारे और बहुत-से बुज़ुर्गों को भी दीने-इस्लाम क़बूल करने पर तरह-ह से दुख पहुँचाए गए मगर ये लोग अपने दीन पर डटे रहे। दूसरों को सीधी-सच्ची राह दिखाते रहे। दुख झेलते रहे, मगर अपनी और दूसरों दीन-दुनिया सँवारने की बराबर कोशिश करते रहे। उनके बाद अब ारी बारी है। हम भी दीन के लिए दुख उठाने पड़े तो उठाएँगे और लोगों इस्लाम की सीधी-सच्ची राह दिखाएँगे। अल्लाह हमारी मदद करे।

शब्दार्थ और टिप्पणी

दर्दनाक	=	तकलीफ़ से भरा हुआ
अज़ाब	=	गुनाह की सज़ा
आमादा	=	तैयार
ओझ	=	पेट की आँतें (जिसमें ख़ारिज होनेवाले ग़िज़ाई माद्दे ज रहते हैं)
लहू-लुहान	=	ख़ून से लिथड़ा हुआ, रक्त-रंजित

अभ्यास

(क) उत्तर दो :

1. प्यारे नबी (सल्ल॰) किस लिए तशरीफ़ लाए थे?
2. बुरे लोगों ने आपको किस-किस तरह सताया?
3. प्यारे नबी (सल्ल॰) के चचा अबू-तालिब और आप (सल्ल॰) की ब हज़रत ख़दीजा (रज़ि॰) के इन्तिक़ाल के बाद आप (सल्ल॰) किस-किस तरह से सताया गया?
4. ताइफ़वालों ने जब तकलीफ़ पहुँचाई तो आप (सल्ल॰) ने उनके ि क्या दुआ की?
5. ज़ालिमों के ज़ुल्म का हमारे बुज़ुर्गों पर क्या असर पड़ा?

(ख) प्यारे नबी (सल्ल॰) के निम्नलिखित साथियों (रज़ि॰) के बारे में तुम जानते हो? संक्षेप में लिखो :

1. हज़रत बिलाल (रज़ि॰),
2. हज़रत ख़ब्बाब (रज़ि॰),
3. हज़रत यासिर (रज़ि॰)।

कॉलम **'अ'** में सताए जाने के वाक़िआत और कॉलम **'ब'** में सताई जानेवाली तयों के नाम दर्ज हैं। उचित जोड़े लगाओ :

(अ)	(ब)
1. ऊँट की ओझड़ी	1. हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰)
2. गर्म रेत पर लिटाना	2. हज़रत यासिर (रज़ि॰) की बीवी
3. जलते हुए कोयलों पर लिटाना	3. हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰)
4. बरछी मारकर शहीद करना	4. हज़रत बिलाल (रज़ि॰)
5. मारना-पीटना	5. हज़रत ख़ब्बाब (रज़ि॰)

ख़ाली जगहों को भरो :

1. इस्लाम को अपनाने में सबकी.....है।
2. बुरे लोग अपनी बुराइयाँ छोड़ने के लिए.....न हुए।
3. आप (सल्ल॰) के पूरे ख़ानदान के.....से बाहर करके उनपर खाना-पानी बन्द कर दिया।
4. .....आपका जानी दुश्मन था।

कुछ और काम

1. इस पाठ से तुमने क्या सीखा? दर्जे में सुनाओ।
2. प्यारे नबी (सल्ल॰) के जिन प्यारे साथियों का इस पाठ में ज़िक्र है, उनके इस्लाम लाने और अल्लाह की राह में सताए जाने के वाक़िआत की कुछ और तफ़्सील अपने अब्बू, अम्मी या उस्ताद से मालूम करो।

20

हमारे सच्चे ख़लीफ़ा

अल्लाह ने सब कुछ बनाया। उसी ने सबको पैदा किया। वही सब ज़रूरतें पूरी करता है। उसकी सल्तनत का एक छोटा-सा हिस्सा हमारी ज़मीन है। ज़मीन पर हम सब अल्लाह के ख़लीफ़ा हैं। ख़लीफ़ा नायब मॉनीटर को कहते हैं। जिस तरह हमारी क्लास के असूल ज़िम्मेदार ह उस्ताद हैं, लेकिन कुछ काम वे मॉनीटर के ज़रीए भी कराते हैं। इसी त सबका असूल हाकिम, मालिक और आक़ा तो अल्लाह तआ़ला ही उसकी सल्तनत बहुत लम्बी-चौड़ी है, इतनी बड़ी कि हम सोच भी न सकते। अपनी इस सल्तनत के एक छोटे-से हिस्से पर, जिसका नाम ज़म है, अल्लाह तआ़ला ने हमको अपना नायब बनाया है और यहाँ के इन्तिज़ की कुछ ज़िम्मेदारियाँ हमारे ऊपर डाली हैं। हमारा काम दरअसूल ज़मीन अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी पूरी करना है।

अल्लाह के ख़लीफ़ा या नायब यूँ तो सारे इनसान हैं लेकिन मुल्क इन्तिज़ाम करने के लिए उन्हें किसी न किसी को अपना सरदार बनाना ह है। मुसलमान इस काम के लिए जिसे अपना सरदार बनाते हैं वह 'ख़लीफ़ा' कहलाता है। ख़लीफ़ा अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ दुनिया का इन्तिज़ करता है और सबको अल्लाह की मर्ज़ी पर चलाता है। प्यारे नबी (सल्ल के बाद हमारे जिन बुज़ुर्गों ने अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ दुनिया ठीक-ठीक इन्तिज़ाम किया वे 'ख़ुल्फ़ा-ए-राशिदीन' या सच्चे ख़लीफ़ा कहल हैं। हज़रत अबू-बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, हज़रत अली (रज़ि॰) चारों बहुत मशहूर ख़लीफ़ा हुए हैं। ये चारों हज़रात प्यारे नबी (सल्ल॰)

ारे साथी थे। बहुत ही नेक और इन्तिहाई ईमानदार थे। इन्होंने अपनी म्मेदारियाँ बड़े अच्छे ढंग से निभाईं, बहुत ही अच्छा इन्तिज़ाम किया। ल्लाह के सच्चे दीन को सारी दुनिया में फैलाने की हर मुमकिन कोशिश ।

ारत अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰)

प्यारे नबी के बाद सबसे पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) हुए । उनकी प्यारी बेटी हज़रत आइशा (रज़ि॰) प्यारे नबी (सल्ल॰) को ब्याही । आप (सल्ल॰) के वह सच्चे दोस्त थे। आप (सल्ल॰) को वे अपने माँ-प से भी ज़्यादा चाहते थे। आप (सल्ल॰) की ज़बान से जो कुछ सुनते सी झिझक के बग़ैर फ़ौरन उसको सच मान लेते थे। इसी लिए उनको द्दीक़' भी कहा जाता है। सिर्फ़ सवा दो साल ख़लीफ़ा रहे मगर इतने ही ों में ऐसे-ऐसे काम किए, जिन्हें दुनिया हमेशा याद रखेगी। प्यारे नबी ल्ल॰) ने अपनी बीमारी के ज़माने में इन्हीं को नमाज़ पढ़ाने के लिए र्रर किया था। आप (सल्ल॰) फ़रमाया करते थे–

"अगर सारी दुनिया के मुसलमानों का ईमान तौला जाए, तो अबू-बक्र ईमान का पलड़ा झुक जाएगा।"

इनकी ख़ूबियाँ गिनाते हुए प्यारे नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया–

"इनमें इतनी ख़ूबियाँ हैं जितने आसमान में तारे।"

हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) ने दीन की राह में अपना सब कुछ लुटा ा। अल्लाह और रसूल को ख़ुश करने के लिए जो कुछ बन पड़ा, कर रे। इसी लिए प्यारे नबी (सल्ल॰) के बाद सबसे पहले उनका नाम लिया ता है। हम सबके दिलों में उनकी बड़ी इज़्ज़त है। अल्लाह उनसे राज़ी ।

हज़रत उमर (रज़ि॰)

हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) के बाद हज़रत उमर (रज़ि॰) हमारे दूस ख़लीफ़ा हुए। वे लगभग दस साल ख़लीफ़ा रहे। उनकी ख़िलाफ़त व ज़माना सारी दुनिया की तारीख़ में 'मिसाली ज़माना' माना जाता है।

हज़रत उमर (रज़ि॰) भी प्यारे नबी (सल्ल॰) के सच्चे दोस्त थे। उनव प्यारी बेटी हज़रत हफ़्सा (रज़ि॰) प्यारे नबी (सल्ल॰) को ब्याही थीं। बुराइ को मिटाने और भलाइयों को फैलाने में उन्होंने बड़ा काम किया। उन अनगिनत ख़ूबियाँ थीं। बहुत ही सादा ज़िन्दगी गुज़ारते थे। अपनी ज़िम्मेदारि का बड़ा ख़्याल रखते थे। किसी को दुख-दर्द में देखकर तड़प जाते थे औ फ़ौरन मदद करते थे। बुराइयों से तो उनको इतनी नफ़रत थी कि प्यारे न (सल्ल॰) फ़रमाते थे—

"उमर के साए से भी शैतान भागता है।"

एक बार हज़रत उमर (रज़ि॰) नमाज़ पढ़ रहे थे कि एक काफ़िर गुला अबू-लूलू फ़ीरोज़ ने उन्हें शहीद कर दिया। इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलै राजिऊन।

हज़रत उस्मान ग़नी (रज़ि॰)

हज़रत उमर (रज़ि॰) के बाद हज़रत उस्मान ग़नी (रज़ि॰) तीस ख़लीफ़ा चुने गए। वे भी प्यारे नबी (सल्ल॰) के सच्चे दोस्त थे। आ (सल्ल॰) की प्यारी बेटी हज़रत रुक़ैया (रज़ि॰) उनको ब्याही थीं। हज़र रुक़ैया के मरने के बाद प्यारे नबी (सल्ल॰) ने अपनी दूसरी बेटी हज़र उम्मे-कुलसूम (रज़ि॰) को उनसे ब्याह दिया। इसी लिए हज़रत उस्मा (रज़ि॰) को 'ज़ुन्नूरैन' यानी दो नूरवाले कहा जाता है। क़ुरआन को फैला में उन्होंने बड़ी मेहनत की। उनकी हया और पाकबाज़ी मशहूर है। प्य

बी (सल्ल॰) फ़रमाते थे—

"उस्मान बड़े हयावाले हैं। उनसे फ़रिश्ते भी हया करते हैं।"

हज़रत उस्मान (रज़ि॰) की ख़िलाफ़त की मुद्दत कुल 12 साल है। रआन मजीद की तिलावत का उन्हें बेहद शौक़ था। तिलावत ही कर रहे कि चन्द बाग़ियों ने उनको शहीद कर दिया। इन्नालिल्लाहि व इन्ना लैहि राजिऊन।

ज़रत अली (रज़ि॰)

हज़रत उस्मान (रज़ि॰) के बाद हज़रत अली (रज़ि॰) चौथे ख़लीफ़ा ए। प्यारे नबी (सल्ल॰) की चहेती बेटी बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) इन्हीं को ाही थीं। हज़रत हसन (रज़ि॰) और हज़रत हुसैन (रज़ि॰) इन्हीं के हबज़ादे थे। हज़रत अली (रज़ि॰) की बहादुरी, परहेज़गारी और सादगी शहूर है। उनकी ख़िलाफ़त के ज़माने में झगड़ा उठ खड़ा हुआ, फिर भी हक़ पर जमे रहे। नमाज़ को जा रहे थे कि एक बदबख़्त ने उन्हें शहीद र दिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। हज़रत अली (रज़ि॰) ा ख़िलाफ़त की मुद्दत लगभग पाँच साल है।

ये चारों ख़लीफ़ा प्यारे नबी (सल्ल॰) के सहाबी और सच्चे दोस्त थे। नकी अच्छाइयों की वजह से अल्लाह तआला ने उनकी ज़िन्दगी ही में उन्हें क साथ जन्नत की ख़ुशख़बरी दे दी थी। इन चारों की ख़िलाफ़त लगभग स साल रही, मगर इन नेक बुज़ुर्गों ने दुनिया का इन्तिज़ाम इतना अच्छा ाया कि दुनिया आज तक उस ज़माने के लिए तरस रही है। अल्लाह द वह दिन लाए कि सारी दुनिया उसी की मर्ज़ी पर चलने लगे और बको अम्न और चैन नसीब हो।

शब्दार्थ और टिप्पणी

सल्तनत	=	हुकूमत
शहीद	=	अल्लाह की राह में म जानेवाला
इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन	=	हम अल्लाह ही के हैं उ हमें अल्लाह की तरफ़ लौट जाना है।
ज़ुन्नूरैन	=	दो नूरवाले,
हया	=	शर्म

अभ्यास

(क) उत्तर दो :

1. ख़ुल्फ़ा-ए-राशिदीन किन हज़रात (महानुभावों) को कहते हैं?
2. ख़लीफ़ा से क्या मुराद है?
3. हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) को 'सिद्दीक़' क्यों कहा जाता है?
4. किस ख़लीफ़ा का ज़माना 'मिसाली ज़माना' माना जाता है?
5. हज़रत उस्मान (रज़ि॰) को 'ज़ुन्नूरैन' (दो नूरवाले) क्यों कहा जाता
6. दुनिया आज तक ख़िलाफ़त के ज़माने के लिए क्यों तरस रही है?

(ख) ख़ाली जगहों में ख़ुल्फ़ा-ए-राशिदीन के नाम लिखो :

1. .....में इतनी ख़ूबियाँ हैं, जितने आसमान में तारे।

2. .....के साए से भी शैतान भागता है।

3. .....की बहादुरी, सादगी और परहेज़गारी मशहूर है।

4. .....की हया और पाकबाज़ी मशहूर है।

) ख़ाली जगहों को भरो :

1. ज़मीन पर हम सब अल्लाह के.....हैं।

2. हमारा काम दरअस्ल ज़मीन पर अल्लाह तआ़ला की..... पूरी करना है।

3. अगर सारी दुनिया के मुसलमानों का ईमान तौला जाए तो..... के ईमान का पलड़ा झुक जाएगा।

4. इन चारों की ख़िलाफ़त लगभग.....साल रही।

21

नबियों के हालात

अल्लाह तआ़ला ने बहुत-से नबी भेजे। नबी हर मुल्क और हर क़ौ में आए। आख़िर में प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) तशरीफ़ ला आपके बाद अब कोई नबी न आएगा। आपसे पहले कितने नबी आ च थे? उनके नाम क्या थे? कहाँ-कहाँ और किस-किस क़ौम में आए? इन बातों का इल्म तो अल्लाह तआ़ला ही को है। हाँ, क़ुरआन मजीद में जिन ज़िक्र है उनमें से तीन मशहूर नबियों—हज़रत आदम (अलैहि॰), हज़ इबराहीम (अलैहि॰), हज़रत नूह (अलैहि॰) का हाल हम पिछली कित (सच्चा दीन, भाग-1) में पढ़ चुके हैं। अब हम तीन और मशहूर नबियों हाल पढ़ेंगे। उनके नाम हैं हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰), हज़रत मूसा (अलैहि और हज़रत ईसा (अलैहि॰)।

हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰)

हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) के दो बेटे थे—हज़रत इसमाईल (अलैहि और हज़रत इसहाक़ (अलैहि॰)। हज़रत इसहाक़ (अलैहि॰) के एक हज़रत याक़ूब (अलैहि॰) थे। अल्लाह ने इन तीनों को भी नबी बनाया थ हज़रत याक़ूब के बारह बेटे थे। इनमें दो छोटे तो एक माँ से थे, बाक़ी दूसरी माँओं से। दोनों छोटे बेटों में बड़े बेटे का नाम हज़रत यूसुफ़ (अलैहि था।

बचपन

हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) अपने भाइयों में सबसे ज़्यादा नेक उ

ानिहार थे। हज़रत याक़ूब (अलैहि०) आपको बहुत चाहते थे। बचपन में ज़रत यूसुफ़ (अलैहि०) ने ख़्वाब देखा कि चाँद-सूरज और ग्यारह सितारे ाप (अलैहि०) को सजदा कर रहे हैं। आप (अलैहि०) ने यह ख़्वाब अपने ब्बा से बयान किया। वे समझ गए कि अल्लाह आपको बहुत ऊँचा क़ाम देनेवाला है। लेकिन यूसुफ़ (अलैहि०) से कहा कि बेटे इस ख़्वाब का ज़्क्र अपने भाइयों से न करना वरना वे मुझे और तुझे बहुत परेशान करेंगे।

ाइयों की शरारत

हज़रत यूसुफ़ (अलैहि०) के सौतेले भाई बहुत ही बुरे थे। वे आपसे हुत जलते थे। एक दिन भाइयों ने आपको मार डालने की ठानी। सैर के ाने उन्हें बाहर ले गए। ज़बरदस्ती एक अंधे कुँए में डाल दिया। शाम ो दिखावे के लिए रोते-धोते घर लौटे। अब्बा से झूठमूठ कह दिया कि हम ाग दौड़ में मुक़ाबला कर रहे थे, यूसुफ़ (अलैहि०) अकेले हमारे सामान की ख़भाल में लगे थे। इतने में भेड़िया आया और उन्हें चीर-फाड़कर खा ाा। अब्बा उनकी चाल समझ गए, मगर सब्र से काम लिया।

ुफ़ (अलैहि०) मिस्र में

हज़रत यूसुफ़ (अलैहि०) कुएँ में थे कि उधर से एक क़ाफ़िला गुज़रा। आँ देखकर ठहर गया। काफ़िले का एक आदमी पानी लेने कुएँ पर ुंचा। वहाँ पानी की जगह हज़रत यूसुफ़ (अलैहि०) मिल गए। वह बहुत श हुआ; आपको बाहर निकाला, फिर वे लोग आपको अपने साथ मिस्र गए। मिस्र के अज़ीज़ (हाकिम) की आप पर नज़र पड़ी, शरीफ़ लड़का मझकर आपको ख़रीद लिया।

ा में

हज़रत यूसुफ़ (अलैहि०) मिस्र के अज़ीज़ के यहाँ रहने लगे। उस

ज़माने में मिस्र के लोग एक अल्लाह को छोड़कर बहुत-से देवी-देवताओं
पूजते थे। बुरे-बुरे काम करते थे। अपने बादशाह को भी सूरज का अवत
समझते थे। हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) उनके बीच पले-बढ़े, मगर उन लोगों
किसी ख़राब बात को आपने नहीं अपनाया। मिस्र के अ़ज़ीज़ (हाकिम)
बीवी कुछ अच्छी औरत न थी। वह हज़रत यूसुफ़ को बुरे काम पर उकस
लगी। जब आप आमादा न हुए तो बहुत बिगड़ी और नाहक़ आपको जे
भिजवा दिया।

जेल में दो क़ैदी और दाख़िल हुए। जेलवाले आपकी अच्छाइयों अ
आपके नेक बरताव से बहुत ख़ुश थे। एक दिन दोनों क़ैदियों ने ख़ाब देख
ताबीर पूछने हज़रत यूसुफ़ के पास आए। एक बोला, "मैंने ख़ाब देखा
कि शराब निचोड़ रहा हूँ।" दूसरा बोला, "मैंने देखा है कि मेरे सिर
रोटियाँ रखी हैं और परिन्दे उनको खा रहे हैं।"

मौक़ा पाकर हज़रत यूसुफ़ ने पहले उन्हें दीन (धर्म) की बुनियादी ब
समझाईं, फिर देवी-देवताओं को छोड़कर एक अल्लाह की बन्दगी करने
लिए कहा—

"ऐ जेल के साथियो! तुम ख़ुद ही सोचो कि बहुत-से अलग-अलग
बेहतर हैं या वह एक अल्लाह जो सब पर ग़ालिब है? उसको छोड़कर
जिनको पूज रहे हो (उनकी कोई असलियत नहीं), वे सिर्फ़ कुछ नाम हैं
तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं। अल्लाह तआ़ला ने उनके
कोई सनद नहीं उतारी है। हुकूमत का हक़ तो सिर्फ़ अल्लाह को है। उस
हुक्म है कि उसके सिवा किसी और की बन्दगी न करो। सिर्फ़ यही सी
राह है, मगर अकसर लोग जानते नहीं हैं।

ऐ जेल के साथियो! तुम्हारे ख़ाब का मतलब यह है कि तुममें से

अपने बादशाह को शराब पिलाएगा, दूसरा सूली पर चढ़ा दिया जाएगा ार परिन्दे उसका सिर नोच-नोचकर खाएँगे।''

आख़िर वही हुआ जो हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) ने बताया था। एक दी छूटकर बादशाह का नौकर हो गया दूसरा सूली पर चढ़ा दिया गया।

ादशाह का ख़ाब

एक दिन बादशाह ने ख़ाब देखा कि 'सात मोटी गाएँ हैं, जिनको सात बली गाएँ खा रही हैं और अनाज की सात बालें हरी हैं और सात सूखी।' सने लोगों से ख़ाब का मतलब पूछा, मगर कोई न बता सका। आख़िर ज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) से पूछा गया। आपने कहा, ''सात साल ख़ूब ग़ल्ला दा होगा, फिर सात साल सख़्त क़हत पड़ेगा।'' उसके बाद आपने क़हत बचने की तरकीब भी बता दी। बादशाह आप (अलैहि॰) से मिलकर बहुत ुश हुआ। हुकूमत का सारा काम-काज आपके सुपुर्द कर दिया। आपने ड़ा अच्छा इन्तिज़ाम किया, बहुत-सा ग़ल्ला बचा लिया, जो क़हत के ज़माने ं काम आया। आपने पास-पड़ोस के मुल्कों की भी ग़ल्ले से मदद की।

ाइयों का मिस्र आना

हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) के वतन में भी अकाल पड़ा था। आपके भाई ाल्ला लेने मिस्र आए। हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) के पास पहुँचे, मगर पहचान ा सके। हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) ने उन्हें पहचान लिया। भरपूर ग़ल्ला दिया और दाम भी लौटा दिए। उनसे कहा कि आइन्दा अपने छोटे भाई को भी ाथ लाएँ वरना ग़ल्ला नहीं दिया जाएगा। अब्बा मियाँ से कह-सुनकर दूसरी ार छोटे भाई को भी साथ लाए। उन्हें देखकर हज़रत यूसुफ़ बहुत ख़ुश ुए। अलग बुलाकर बता दिया और उन्हें अपने पास रोकने के लिए आपने एक तदबीर की। लौटने लगे तो उनके सामान में अपना प्याला रख दिया।

कुछ देर बाद प्याले की तलाश हुई। नौकरों को शक हुआ, ज़ाकर साम
की तलाशी ली। प्याला निकाला तो चोरी के इल्ज़ाम में वे रोक लिए ग
एक भाई को इसका बड़ा दुख हुआ। उसने घर लौटने से इनकार कर दि
दूसरे भाई घर लौटे। अब्बा मियाँ से सारा वाक़िआ सुनाया। उन्हें चोरी
यक़ीन न आया। बहुत अफ़सोस करने लगे।

पूरा कुंबा मिस्र में

तीसरी बार वे लोग मामूली पूँजी लेकर फिर आए। हज़रत-यूसुफ़
अपना दुखड़ा सुनाया और ग़ल्ले की भीख माँगी। उनकी बेबसी देख
आपका दिल भर आया। उन्हें बता दिया कि मैं यूसुफ़ हूँ। भाई ब
शर्मिन्दा हुए, अपने किए पर बहुत पछताए। हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) ने
नहीं कहा, माफ़ कर दिया। आख़िर में सबको अपने पास मिस्र बुला लि
जब बाल-बच्चों समेत ये लोग मिस्र पहुँचे तो आपने माँ-बाप को अपने स
तख़्त पर बिठा लिया। अचानक सब आपके आगे झुक गए। हज़रत यू
(अलैहि॰) बोले—

"अब्बा जान! यह है मेरे उस ख़ाब का मतलब, जो मैंने पहले देखा
कि सूरज-चाँद और ग्यारह सितारे मुझे सजदा कर रहे हैं। मेरे रब ने उसे
कर दिखाया। उसका बड़ा करम है कि उसने मुझे जेल से निकाला और उ
लोगों से मुलाक़ात कराई।" फिर सब लोग ख़ुश-ख़ुश मिस्र में रहने ल

इस कहानी से हमने कई बातें सीखीं :

❶ कभी-कभी अल्लाह शर (बुराई) से भी ख़ैर (भलाई) की सूरत
कर देता है। भाइयों ने हसद में आकर हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) को कुएँ
डाल दिया, मगर उनकी यही शरारत आपके मिस्र पहुँचकर हुकूमत करने
ज़रीआ बनी।

❷ बदला ले सकने के बावजूद माफ़ कर देना ज़्यादा अच्छा है। इयों ने हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) के साथ क्या कुछ नहीं किया, मगर मने माफ़ कर दिया।

❸ जहाँ कहीं और जिस हाल में भी हों दीन की बातें लोगों तक वाते रहना चाहिए। हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) जेल में डाल दिए गए, मगर र वहाँ भी ख़ामोश नहीं बैठे। जेलवालों को अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाते ।

❹ बुरे से बुरे लोगों के बीच में रहकर भी अपना अच्छा तरीक़ा नहीं लना चाहिए, न बुरों के बुरे तरीक़े पर चलना चाहिए, बल्कि बुरों को छा बनाने की कोशिश करते रहना चाहिए। हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) लाह के बाग़ियों और बुरे लोगों में पले, मगर उनका कोई बुरा असर नहीं ा, बल्कि ख़ुद उन्हीं को अच्छा बनाने की कोशिश की।

शब्दार्थ और टिप्पणी

	=	जिसको पकड़कर किसी जगह बन्द कर दिया जाए।
ा	=	अकाल, सूखा, अनाज और पानी की कमी
ार	=	मुशरिक (मूर्तिपूजक) लोगों के अक़ीदे के मुताबिक़ कोई देवता किसी बड़े काम को अंजाम देने के लिए इनसान या किसी और सूरत में ज़ाहिर होता है। इसको वे अवतार कहते हैं।
ा कुआँ	=	सूखा कुआँ, अंधेरा कुआँ
ः	=	सुबूत, दलील, प्रमाण
	=	सरकश, नाफ़रमान, विद्रोही
ा	=	दर्द भरी कहानी
र	=	ख़्वाब का नतीजा बयान करना।

अभ्यास

(क) संक्षेप में उत्तर दो :

1. हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) के ख़ानदान के बारे में तुम क्या जानते ह
2. बचपन में हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) ने क्या ख़ाब देखा था?
3. हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) के सौतेले भाइयों ने आपके साथ क्या शरा की?
4. हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) ने जेल में क़ैदियों को कौन-सी बातें समझा
5. बादशाह ने हुकूमत का सारा काम हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) के सु क्यों कर दिया?
6. हज़रत यूसुफ़ के बचपन का ख़ाब कैसे पूरा हुआ?

(ख) हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) ने नीचे लिखे ख़ाबों का मतलब क्या बताया?

1. एक बोला : "मैंने ख़ाब देखा है कि शराब निचोड़ रहा हूँ।" दूर बोला : "मैंने देखा है कि मेरे सिर पर रोटियाँ रखी हैं और पि उनको खा रहे हैं।"
2. "सात मोटी गाएँ हैं, जिनको सात दुबली गाएँ खा रही हैं और अन की सात बालें हरी हैं और सात सूखी।"

(ग) ख़ाली जगहों को भरो :

1. हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) के वालिद का नाम.....था।
2. हज़रत याक़ूब (अलैहि॰) को अल्लाह ने.....बेटे दिए थे।
3. हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) अपने भाइयों में सबसे ज़्यादा नेक और.....
4. हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) को.....ने ख़रीद लिया।
5. मिस्र के अज़ीज़ की.....ने नाहक़ आपको जेल भिजवा दिय

हज़रत मूसा (अलैहि॰)

हज़रत मूसा (अलैहि॰) का ताल्लुक़ हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) के ख़ानदान था। हम पढ़ चुके हैं कि हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) ने अपने कुंबे के सभी गों को मिस्र बुला लिया था। ये सब लोग मिस्र ही में आबाद हो गए थे। की आल-औलाद फली-फूली। हज़रत याक़ूब (अलैहि॰) का दूसरा नाम राईल था। और चूँकि ये लोग उनकी औलाद थे इसलिए 'बनी इसराईल' 'इसराईली' कहलाए। बनी-इसराईल की बहुत दिनों तक मिस्र में बड़ी ज़त रही। फिर उनके अन्दर तरह-तरह की बुराइयाँ पैदा हो गईं। आख़िर स्रियों की नज़र से ये लोग गिर गए। मिस्री इन्हें ज़लील समझने और ाने लगे। मिस्र का बादशाह फ़िरऔन कहलाता था। फ़िरऔन अपने को ज देवता का अवतार बताता और अपनी पूजा कराता था। फ़िरऔन ने हें हुक्म दे दिया था कि बनी इसराईल में जो भी लड़के पैदा हों, उन्हें ज़ब्ह दिया जाए। हाँ, लड़कियाँ छोड़ दी जाएँ।

पन

यह हुक्म जारी था कि हज़रत मूसा (अलैहि॰) पैदा हुए। आपकी मी जान बहुत परेशान थीं। उन्हें डर था कि कहीं ज़ालिम मेरे बच्चे को ज़ब्ह न कर दें। अल्लाह ने ढारस बँधाई। फिर अल्लाह के हुक्म से होंने आपको एक सन्दूक़ में बन्द करके दरिया में डाल दिया। दरिया के नारे फ़िरऔन का महल था। सन्दूक़ बहता हुआ महल के पास पहुँचा, रऔन की बीवी ने उसे निकलवा मँगवाया। सन्दूक़ से बच्चा निकला। वे

बहुत ख़ुश हुईं। बच्चे को पालना चाहा, मगर वह किसी का दूध नहीं पीत था। महल में मूसा (अलैहि॰) की बहन भी मौजूद थीं। वह चुपके से भा की ख़ैर-ख़बर लेने गई थीं। उन्होंने कहा, "मैं एक ऐसी अन्ना का पत बताती हूँ, जो इसे पाल लेगी।" इस तरह किसी को पता भी नहीं चला औ हज़रत मूसा (अलैहि॰) की अम्मी जान ही को उनकी परवरिश के लिए र लिया गया और इस तरह अल्लाह ने बेटे को माँ से फिर मिला दिया।

जवानी

फ़िरऔन के घर आप पले-बढ़े, जवान हुए। अल्लाह ने आपको अच्छ डील-डौल दिया था। एक रात सब सो रहे थे कि आपने एक मिस्री को देख कि वह आपकी क़ौम के एक आदमी को बुरी तरह मार रहा है। आपने मन किया। मगर वह न माना। आपसे यह ज़ुल्म देखा न गया। आपने उ ज़ालिम को एक घूँसा मार दिया। ख़ुदा का करना, घूँसा ऐसा पड़ा कि व मर गया।

मदयन में

सज़ा का डर था, इसलिए आप मिस्र से निकल खड़े हुए। चलते-चल मिस्र से दूर मदयन पहुँचे। थके-हारे थे, एक जगह पानी और छाया देखक बैठ गए। देखा कि लोग अपने जानवरों को पानी पिला रहे हैं। मगर ल लड़कियाँ एक तरफ़ देर से खड़ी हैं। आपको उनपर तरस आया। कह सुनकर उनके जानवरों को पानी पिला दिया। लड़कियाँ ख़ुश-ख़ुश घर लौटी अपने अब्बा मियाँ से सब कुछ कह सुनाया। उन्होंने मुसाफ़िर समझक आपको बुला भेजा। आप बड़े मियाँ के पास पहुँचे। वे मुहब्बत से पे आए। आपसे सारे वाक़िआत पूछे। बहुत तसल्ली दी। अपने घर रख लि और अपनी एक लड़की से उनकी शादी कर दी।

बी बनाए गए

आठ-दस साल बाद आप अपनी बीवी को लेकर मिस्र लौटने लगे। त हो गई थी। रास्ता भी नज़र नहीं आ रहा था। आपने दूर एक रौशनी वी, समझा वहाँ कुछ लोग होंगे। बीवी को वहीं ठहराकर आग लेने और स्ता पूछने चले। क़रीब पहुँचे, देखा कि रौशनी एक पेड़ पर है। पेड़ से ावाज़ आई, आवाज़ अल्लाह तआ़ला की थी। अल्लाह ने आपको नबी ाया। आपने नबी होने की निशानियाँ माँगीं, ताकि कोई झुठला न सके। ल्लाह तआ़ला ने कहा, "अच्छा, अपनी लाठी ज़मीन पर डाल दो।" आपने ल दी तो वह दौड़ता हुआ साँप बन गया। आप डरे। अल्लाह तआ़ला ने ा, "डरो मत, इसे पकड़ लो।" हिम्मत करके पकड़ा तो वह फिर लाठी । यह तो एक निशानी हुई। दूसरी निशानी यह थी कि अपना हाथ बग़ल रखकर निकालते तो वह चमकने लगता। आपकी दुआ़ पर अल्लाह ने पके भाई हारून (अलैहि॰) को भी आपका सहायक और नबी बना दिया।

रऔन के दरबार में

अब दोनों अल्लाह के हुक्म से फ़िरऔन के पास गए। उससे अल्लाह कहा मानने और ज़ुल्म से बाज़ आने को कहा। वह इसके लिए तैयार हुआ। नबी होने की निशानी माँगी। आपने निशानियाँ दिखाईं। उसने ें जादूगर बताया और बोला, ऐसा तो जादूगर भी कर सकते हैं। जी चाहे मुक़ाबला कर लो।

ूगरों से मुक़ाबला

त्योहार के दिन जश्न के मैदान में जादूगरों से मुक़ाबले की ठहरी। त-से जादूगर और हज़ारों तमाशाई जमा हुए। जादूगरों ने नज़रबन्दी के रस्सियाँ डालीं तो वे दौड़ते हुए साँप दिखाई देने लगीं। अल्लाह के

हुक्म से आपने अपनी लाठी फेंकी। वह अजगर बनकर जादूगरों के साँ को निगलने लगी। जादूगर समझ गए कि यह जादू नहीं अल्लाह की निशा है। वे सब अल्लाह पर ईमान ले आए और हज़रत मूसा (अलैहि॰) के सा बन गए। फ़िरऔन अब भी न माना, उल्टा जादूगरों को मार डालने धमकी दी, मगर उन्होंने परवाह न की।

फ़िरऔन का डूबना

अब अल्लाह तआ़ला ने फ़िरऔन और उसकी क़ौम की नसीहत लिए छोटे-बड़े कई अज़ाब भेजे। कभी सूखा, कभी सैलाब, कभी टिड्डी द कभी ख़ून की बारिश, मगर लोग न माने, बराबर आपको झुठलाते ओ बनी-इसराईल पर जुल्म करते रहे। आख़िर अल्लाह के हुक्म से एक र आप बनी इसराईल को लेकर चल खड़े हुए। फ़िरऔन ने फ़ौज लेकर पी किया। रास्ते में समुद्र पड़ा। अल्लाह के हुक्म से आपने समुद्र पर ल मारी। समुद्र ने रास्ता दे दिया। आप और आपके साथी पार उतर ग फ़िरऔन और उसकी फ़ौज भी आगे बढ़ी, मगर समुद्र का पानी फिर मि गया और वह अपनी फ़ौज समेत समुद्र में डूब गया। मूसा (अलैहि॰) उ उनकी क़ौम आगे बढ़ी, सीना कीं वादी में पहुँची। वहाँ अल्लाह तआ़ला उनपर बादलों का साया किया, खाने के लिए मन्न व सल्वा जैसी मज़े चीज़ें उतारीं। फिर अल्लाह तआ़ला ने मूसा (अलैहि॰) को चालीस दिन लिए तूर पहाड़ पर बुलाया और उन्हें अपनी किताब तौरात दी। आपके प कुछ लोगों ने मिस्रियों की तरह सोने-चाँदी का बछड़ा बनाकर उसकी पू शुरू कर दी। मिस्रियों के साथ रहते-रहते उनकी बहुत-सी बुरी बातें वे सीख गए थे। हज़रत मूसा (अलैहि॰) वापस आए तो बहुत बिगड़े और उ तौबा कराई।

फिर सबको लेकर आगे बढ़े। बाप-दादा के वतन शाम पर क़ब्ज़ा करना हा। मगर आपकी क़ौम बहुत बुज़दिल और निकम्मी हो चुकी थी। दुश्मनों मुक़ाबले के लिए तैयार न हुई। आख़िर अल्लाह तआ़ला ने नाराज़ होकर हें भटका दिया और चालीस साल तक वे रेगिस्तान में मारे-मारे फिरे।

क बुज़ुर्ग से मुलाक़ात

अल्लाह तआ़ला के हुक्म से हज़रत मूसा (अलैहि॰) एक बुज़ुर्ग से लने गए। खाने के लिए अपने साथ मछली ले गए थे। एक जगह ठहरकर राम करने लगे। अल्लाह का करना, मछली कूदकर पानी में चली गई। बुज़ुर्ग वहीं रहते थे। आप उनसे मिले। उनके साथ चले, कश्ती में सवार ए। बुज़ुर्ग ने उस कश्ती में सूराख़ कर दिया। आगे बढ़े तो एक बेगुनाह च्चे को मार डाला। और आगे गए तो बिला उजरत (मज़दूरी लिए बिना) क टेढ़ी दीवार की मरम्मत कर दी। हज़रत मूसा (अलैहि॰) ने यह सब देखा, ासे रहा न गया। एतिराज़ किया तो बुज़ुर्ग ने बताया कि ये सब मैंने खुद ों, अल्लाह के हुक्म से किया है। कश्ती ग़रीब मल्लाहों की है। यहाँ का लिम बादशाह अच्छी कश्तियाँ छीन लेता है। यह कश्ती ऐबदार हो गई, ह वह इसे न ले सकेगा। बच्चा एक अच्छे और नेक माँ-बाप का बेटा था। मी तो वे इससे खुश थे, मगर बड़ा होकर यह बहुत बुरा निकलता। -बाप को बड़ा दुख देता, इसलिए मैंने उसका गला घोंट दिया, ताकि -बाप के दिल में मुहब्बत बाक़ी रहे। दीवार यतीमों की थी। उनके बाप दीवार के नीचे ख़ज़ाना छिपा रखा था। अगर दीवार गिर जाती तो ाना दूसरे लोग उड़ा लेते। चूँकि बच्चे अभी छोटे हैं, जब वे बड़े हो जाएँगे ख़ज़ाना उन्हें मिल जाएगा। हज़रत मूसा (अलैहि॰) की समझ में बात आ और वे मुतमइन हो गए।

इस सबक़ से हमने कई बातें सीखीं

❶ अल्लाह की हिकमतों को कोई समझ नहीं सकता। जिस बच्चे हाथों फ़िरऔन को तबाह कराना था, अल्लाह ने उसे न सिर्फ़ ज़ होने से बचा लिया, बल्कि फ़िरऔन ही के घर उसकी परवरिश करा

❷ अल्लाह की देन का कोई ठिकाना नहीं। न जाने किस-किस राह देता है, बहुत देता है और बिन माँगे देता है। हज़रत मूसा (अलैहि आग लेने गए, तो उन्हें पैग़म्बरी बख़्श दी।

ख़ुदा की देन का मूसा से पूछिए अहवाल।
कि आग लेने को जाएँ पयम्बरी मिल जाए।।

❸ अल्लाह तआ़ला के सारे कामों में बड़ी हिकमत होती है लेकिन अक्सर समझ नहीं पाते। बुज़ुर्ग के हाथों अल्लाह तआ़ला ने जो क कराए थे, देखने में वे क़ाबिले-एतिराज़ थे, मगर उनमें कितनी हिक थी। बुज़ुर्ग ने बताया, तब समझ में आई।

❹ किसी के दिल में जब ईमान उतर जाता है तो कोई डरावा या धम उसे फेर नहीं सकती। फ़िरऔन ने जादूगरों को बहुत डराया-धमक मगर वे ईमान पर जमे रहे।

❺ ग़ैरों के साथ रहते-रहते कमज़ोर ईमानवाले उनकी ग़लत बातें अपना लेते हैं। इसराईली नबियों की औलाद थे, इसके बाव मिस्रियों के साथ रहते-रहते उन्हीं की तरह अल्लाह को छोड़कर बह पूजने लगे।

शब्दार्थ और टिप्पणी

आल-औलाद फली-फूली	=	ख़ानदान में इज़ाफ़ा हुआ
नज़रबन्दी	=	आँखों पर जादू का ऐसा असर डालना कि कुछ का कुछ नज़र आए।
अन्ना	=	वह औरत जिसे बच्चे को दूध पिलाने के लिए रखा जाए।
मन्न व सलवा	=	अल्लाह तआ़ला ने बनी-इसराईल के लिए ये चीज़ें भोजन के रूप में इस्तेमाल के लिए उतारी थीं। ये दोनों चीज़ें उन्हें बिना मेहनत और कोशिश के मिलती थीं।
टिड्डी दल	=	एक क़िस्म के उड़नेवाले कीड़ों का बड़ा दल, जो अक्सर खेत के खेत खाकर साफ़ कर देता है।
ग़र्क़ होना	=	डूबना
बछड़ा	=	गाय क़ा नर बच्चा
निकम्मा	=	नाकारा, कामचोर

अभ्यास

उत्तर दो :

1. हज़रत मूसा (अलैहि॰) कहाँ पले-बढ़े?
2. हज़रत मूसा (अलैहि॰) मिस्र से क्यों निकल खड़े हुए?
3. अल्लाह तआ़ला ने आपको नबी होने की क्या-क्या निशानियाँ दीं?

4. हज़रत मूसा (अलैहि॰) ने फ़िरऔन के दरबार में उससे क्या कहा?
5. अल्लाह तआ़ला ने फ़िरऔन और उसकी क़ौम को क्यों ग़र्क़ व दिया?
6. हज़रत मूसा (अलैहि॰) की क़ौम चालीस साल तक रेगिस्तान में व मारी-मारी फिरी?

(ख) ख़ाली जगहों को भरो :

1. हज़रत मूसा (अलैहि॰) हज़रत.....के ख़ानदान से थे।
2. हज़रत याक़ूब (अलैहि॰) का दूसरा नाम.....था।
3. मिस्र के बादशाह.....कहलाते थे।
4. हज़रत मूसा (अलैहि॰) की.....ही को उनकी परवरिश के लि रख लिया गया।
5. हज़रत मूसा (अलैहि॰) सज़ा से बचने के लिए मिस्र से दूर..... पहुँचे।
6. आपकी दुआ पर अल्लाह तआ़ला ने आपके भाई..... भी नबी बनाया।

हज़रत ईसा (अलैहि॰)

अल्लाह तआ़ला ने बनी-इसराईल पर बड़ा फ़ज़्ल किया। उनमें बहुत नबी पैदा किए। हज़रत ईसा (अलैहि॰) भी उसी क़ौम से थे। आप हज़रत ा (अलैहि॰) के कई सौ साल बाद पैदा हुए। आप बीबी मरयम के थे। बीबी मरयम जब अपनी माँ के पेट में थीं, तभी अम्मी ने होनेवाले वे को अल्लाह की नज़्र करने की ठानी। उनका ख़याल था कि लड़का पैदा ा। अल्लाह का करना कि मरयम पैदा हुईं, फिर भी अम्मी ने नज़्र कर । अल्लाह तआ़ला ने नज़्र क़बूल कर ली। मरयम बैतुल-मक़दिस की ादतगाह में भेज दी गईं। वहाँ हज़रत ज़कारिया (अलैहि॰) ने आपकी ाभाल की। जब कभी हज़रत ज़कारिया (अलैहि॰) आपके कमरे में जाते कुछ न कुछ खाने-पीने का सामान पाते। पूछने पर मालूम होता कि ल्लाह ने भेजा है।

इश

पल-बढ़कर बीबी मरयम जवान हुईं। वे बहुत ही नेक और पारसा की थीं। हर वक़्त अल्लाह तआ़ला की इबादत में लगी रहती थीं। एक ा वे इबादत कर रही थीं कि अल्लाह के हुक्म से एक फ़रिश्ता आया और ाख़बरी दी कि आपके एक अच्छा-सा बेटा पैदा होगा। मरयम को बड़ी ा हुई। बोलीं कि मेरे बच्चा कैसे पैदा हो सकता है, जबकि मैं कुँवारी हूं।

मरयम का कहना ठीक ही था। कहीं पारसा कुँवारी लड़की के बच्चा ा होता है! मगर अल्लाह तो बड़ी क़ुदरतवाला है। हज़रत आदम (अलैहि॰)

को जब बे माँ-बाप के पैदा कर दिया तो माँ मौजूद होने पर बेटा पैदा कर क्या मुश्किल था? आख़िर अल्लाह के हुक्म से मरयम के पेट से हज़रत ई (अलैहि॰) पैदा हुए। मौक़ा तो बड़ी ख़ुशी का था। लेकिन बीबी मरयम बहुत रंज़ था। वे जानती थीं कि बुरे लोग मानेंगे नहीं, मुझे बदनाम करें मगर अल्लाह तआ़ला ने हज़रत ईसा (अलैहि॰) को इतनी निशानियों साथ पैदा किया था कि मामूली समझ का आदमी भी आपको देखते ही न मान लेता और हज़रत मरयम (अलैहि॰) को पाक दामन समझता, बहुत बुरा और अक़्ल का कोरा ही कुछ और सोचता।

बचपन

आख़िर हज़रत मरयम (अलैहि॰) बच्चे को लेकर शहर आईं। ल इकट्ठा हुए। बुरे लोगों ने लानत-मलामत शुरू की, हज़रत मरयम चुप कि बच्चा बोल उठा—

"मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उसने मुझे किताब दी और नबी बना और हुक्म दिया कि जब तक जीता रहूँ, नमाज़ और ज़कात की पाब करूँ। मुझे माँ का हक़ अदा करनेवाला बनाया, नाफ़रमान और ज़ालिम न बनाया।"

सुननेवाले हैरान थे कि इतना नन्हा-सा बच्चा अभी से बोलने लग इसे अल्लाह की निशानी समझकर नेक लोग फ़ौरन मान गए, मगर बुरे ल उन्हें बदनाम करते और अपनी दुनिया और आख़िरत बरबाद करते रहे

हज़रत ईसा (अलैहि॰) बड़े हुए। उनपर अल्लाह ने इंजील उतार आपने लोगों को सीधी राह दिखाई। अपने बाद प्यारे नबी (सल्ल॰) के अ की ख़ुशख़बरी दी। बनी-इसराईल को बुराइयों पर टोका, भलाइयों उभारा, उन्हें अल्लाह की बहुत-सी निशानियाँ दिखाईं। मिट्टी की चिड़ि

ाते, उसमें फूँक मारते, अल्लाह के हुक्म से वह ज़िन्दा होकर उड़ने ाती। एक ज़न्म के अंधे की आँखों पर हाथ फेरा, अल्लाह के हुक्म से की आँखों में रौशनी आ गई। एक कोढ़ी को भला-चंगा कर दिया। एक ि को छुआ, अल्लाह के हुक्म से वह ज़िन्दा हो गया। बनी-इसराईल ने सारी निशानियाँ देखीं, मगर वे इतने बिगड़ चुके थे कि आपपर न ईमान ए और न अपनी बुराइयाँ छोड़ीं, उल्टे आपके दुश्मन हो गए। काफ़िर दशाह से आपकी शिकायत की, ग़लत इल्ज़ाम लगाए। झूठे मुक़द्दमे में ाया और कह-सुनकर आपको सूली पर लटकाने का फ़ैसला करा लिया। पका तो कुछ बिगड़ा नहीं, आपके दुश्मन ही घाटे में रहे। आख़िर हज़रत ा (अलैहि॰) को अल्लाह ने वापस बुला लिया और दुश्मनों ही में से एक दमी, जो आप (अलैहि॰) की शक्ल व सूरत से कुछ मिलता-जुलता था, आप (अलैहि॰) के धोखे में सूली पर लटका दिया गया।

आपकी बातें कुछ ग़रीब मछेरों ने सुनी थीं। वही ईमान लाए और ही के ज़रीए से आपकी लाई हुई तालीम फैली। कुछ ही दिनों में आपका र रौशन हो गया और बनी-इसराईल अपनी शरारतों की वजह से ीलो-ख़ार हो गए। देखो तो आज़ भी आपके नाम लेवा बुरे-भले करोड़ों तादाद में मौजूद हैं।

शब्दार्थ और टिप्पणी

फ़ज़्ल	=	मेहरबानी
पारसा	=	नेक
कुँवारी	=	बिन ब्याही, अविवाहिता
क़ुदरत	=	ताक़त
अक़्ल का कोरा	=	बेवक़ूफ़, मूर्ख
लानत-मलामत	=	बुरा-भला कहना
जन्म	=	पैदाइश
कोढ़ी	=	ऐसा शख़्स जिसकी जिल्द बीमारी की वजह सफ़ेद और हाथ-पाँव की उँगलियाँ गल गई ह
मुक़द्दमा	=	अदालती कार्रवाई
मछेरा	=	मछलियाँ पकड़नेवाला।
तालीम	=	शिक्षा।

अभ्यास

(क) संक्षिप्त उत्तर दो :

1. बीबी मरयम बैतुल-मक़दिस की इबादतगाह में क्यों भेजी गईं?
2. फ़रिश्ते ने बीबी मरयम को क्या ख़ुशख़बरी दी?
3. हज़रत ईसा (अलैहि॰) की पैदाइश से बीबी मरयम क्यों रंजीदा थी
4. नेक लोगों पर बच्चे की बात का क्या असर हुआ?
5. हज़रत ईसा (अलैहि॰) ने अपनी क़ौम को अल्लाह तआ़ला की क्या-क निशानियाँ दिखाईं?
6. हज़रत ईसा (अलैहि॰) के पैग़ाम पर बनी-इसराईल क्यों ईमान न ला
7. बनी-इसराईल ने हज़रत ईसा (अलैहि॰) के साथ क्या सुलूक किय

ग) नीचे कुछ बातें लिख दी गई हैं। जो बातें सही हों, उनके सामने बने ख़ाने में सही का निशान (√) और जो बातें ग़लत हों उनके सामने बने ख़ाने में ग़लत का निशान (×) लगाइए :

1. हज़रत ईसा (अलैहि॰) बनी-इसमाईल में से थे। ( )
2. हज़रत ईसा (अलैहि॰) ने अपने बाद प्यारे नबी (सल्ल॰) के आने की ख़ुशख़बरी दी। ( )
3. हज़रत ईसा (अलैहि॰) को अल्लाह तआला ने वापस बुला लिया। ( )
4. बीबी मरयम के कमरे में खाने-पीने का सामान जिन्न भेजते थे। ( )
5. दुश्मनों में से एक आदमी शक में क़त्ल कर दिया गया। ( )

घ) ख़ाली जगहों को भरो :

1. हज़रत ईसा (अलैहि॰).....के कई सौ साल बाद पैदा हुए।
2. हज़रत ईसा (अलैहि॰) की वालिदा का नाम.....था।
3. बैतुल-मक़दिस में.....ने बीबी मरयम की देखभाल की।
4. हज़रत ईसा (अलैहि॰) पर अल्लाह तआला ने.....उतारी।
5. .....के ज़रीए से आप (अलैहि॰) की लाई हुई तालीम फैली।

22

दुआ

मेरे बाज़ू में ताक़त दे,
मेरे ख़ूँ में हरारत दे,
ख़ुदाया! मुझको जुरअत दे,
कि तेरा दीन फैलाऊँ,
जहाँ को राह पर लाऊँ।

ज़बाँ दे पुरअस्र मुझको,
इनायत इल्म कर मुझको,
अ़ता कर वह हुनर मुझको,
कि तेरा दीन फैलाऊँ,
जहाँ को राह पर लाऊँ।

पुजारी मैं बनूँ तेरा,
फ़िदाई मैं बनूँ तेरा,
सिपाही मैं बनूँ तेरा,
कि तेरा दीन फैलाऊँ,
जहाँ को राह पर लाऊँ।

● यूनुस हरगं

❀ ❀ ❀